CPS-02 हिंदी पद्धति

इकाई-1 पाठ आयोजन

1.1 संकल्पना, महत्व, सिम्युलेशन

1.2 सूक्ष्म अध्यापन के कौशल्य

(विषयाभिमुख श्यामफलक, प्रश्नप्रवाहित, सुदढीकरण. उदाहरण)

1.3 सेतुपाठ

इकाई-2 हिंदी भाषा शिक्षा के उद्देश्य एवं कौशल्य]

2.1 सामान्य उद्देश्य

ज्ञानप्राप्ति, अर्थग्रहण, उपयोजन, अभिव्यक्ति

2.2 विशिष्ट उद्देश्य

2.3 हिंदी भाषा में अनुदेशात्मक उद्देश्य

2.4 गुजरात राज्य के कक्षा 6 से 10 तक के पाठ्यक्रम में समाविष्ट निम्नलिखित विशाल उद्देश्य

-संतुलित प्रतिभा का विकास

- राष्ट्रीय एकता एवं चारित्र्य निर्माण

-सांस्कृतिक विरासत का परिचय एवं संवर्धन

-लोकतंत्र प्रशासन में हिंदी का परिचय

2.5 श्रवण, कथन, पठन एवं लेखन कौशल्यो के विकास का महत्व एवं प्रवृत्तियां

इकाई 3 अध्यापन पद्धतियां एवं प्रयुक्तियों

3.1 प्रत्यक्ष, परोक्ष, आगमन निगमन, निरीक्षित स्वाध्याय, प्रकल्प

3.2 प्रश्नोंतर, गान, नतयिकरण एवं संदर्भकथन

इकाई 4 राष्ट्रभाषा की शिक्षा का महत्व

4.1 राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी शिक्षा का महत्व

4.2 आहिंदी भाषा के क्षेत्रों में हिंदी शिक्षा का महत्व

इकाई-1 पाठ आयोजन

1.1 संकल्पना, महत्व, सिम्युलेशन

पाठ आयोजन की संकल्पना :

किसी अध्यापन को प्रभावी बनाने के लिए आयोजन आवश्यक है। शिक्षक आयोजन कैसे करेगा ? शिक्षक को अध्यापन के पहले, अध्यापन के दौरान तथा अध्यापन के पश्चात् सोचना पड़ेगा। इसी सोच में से आयोजन जन्म लेगा। यहाँ शिक्षक का अध्यापन के पहले के, आयोजन की चर्चा होगी। इसी आयोजन को हम पाठ आयोजन कहेंगे। पाठ आयोजन का सरल अर्थ यह है कि कक्षाध्यापन से पहले शिक्षक द्वारा विषयवस्तु के अध्यापन विषय के सर्वांगी योजना इसके अन्तर्गत विषयवस्तु विश्लेषण से लेकर मूल्यांकन तक के सोपानों पर चिन्तन किया जाता है

महत्व :-

पाठ आयोजन का महत्त्व:

(1) शिक्षण योजना शिक्षण कार्य को निश्चित दिशा प्रदान करती है।

(2) विषय-वस्तु को एक तार्किक क्रम में व्यवस्थित करती है।

(3) अध्यापक विषय-वस्तु से सम्बन्धित तथ्यों, पदों, प्रत्ययों, सिद्धांतो आदि को अपनी स्मृति में सजीव कर उन पर पूर्व चिन्तन कर लेता है

(4) बालक व्यवहार के तीन पक्ष-ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा कियात्मक के विकास हेतु संगठित प्रयास निश्चित करता है।

(5) इकाईयों के शिक्षण हेतु आवश्यकतानुसार समय का निर्धारण पूर्व में करता है। इससे सभी इकाईयों को उनके महत्त्व एवं कठिनाई के स्तर के अनुसार समय मिलना सम्भव हो जाता है।

(6) शिक्षणोपयोगी साधन एवं सामग्री का चयन कर उपयोग में लाता है ।

(7) उपलब्ध समय का अधिकाधिक उपयोग करना एक शिक्षक के लिए सम्भव हो जाता है ।

(8) अध्यापक का मनोबल ऊँचा उठता है क्योंकि पूर्व नियोजन से उसका कार्य सरल तथा शिक्षण प्रभावी बनता है ।

सिम्युलेशन

सूक्ष्म अध्यापन में विषय, कक्षा, समय व छात्र और उनकी संख्या सभी बातें वास्तविक नहीं होती । वास्तविक स्थिति में तो विषयवस्तु, कक्षा अवधि व छात्र संख्या सभी दीर्घ (Macro) होते हैं। उन परिस्थितियों से बचकर अधिक उपयोगगी एवं नियन्त्रित परिस्थितियों में अभ्यास हेतु सूक्ष्म अध्यापन का विकास हुआ। इस अभ्यासक्रम में कृत्रिम एवं अवास्तविक स्थिति को वास्तविक समझ कर अभ्यास किया जाता है । इसे अभिरूपता (Simulation) कहते हैं

अभिरूपता काल्पनिक परन्तु सत्य लगने वाली कृत्रिम रूप से निर्मित घटना होती है जिसके सहारे वास्तविक घटना का सामना करने की क्षमता पैदा की जाती है अभिरूपता का उदय प्रशिक्षण प्रणाली के रूप में अभी नया ही है। दीर्घकालीन अभ्यासों और वास्तविक परिस्थितियों की कठिनाइयों के कारण पूर्ण अभ्यास न कर पाने से प्रशिक्षणार्थी सही रूप से कुशलता प्राप्त करने में बहुत समय लेते हैं इस विधि से उन्हें पर्याप्त एवं विविध अभ्यास कराकर शीघ्र व कम खर्च पर कुशलतापूर्वक तैयार किया जा सकता है ।

टैनसे व अनविन (1969) अभिरूपता को सादृश्य की संज्ञा देते हैं क्योंकि इसमें वास्तविकता का आभास है। फिंक (1975) ने अभिरूपता तो वास्तविकता का नियन्त्रित प्रतिनिधित्व कहा है ।

अभिरूपता की आवश्यकता :

अभ्यास के लिए वास्तविक परिस्थितियाँ जुटा पाना सम्भव नहीं होता। सैनिकों को युद्ध हेतु प्रशिक्षण देने के लिए सदैव उन्हें वास्तविक युद्ध में अभ्यास नहीं कराया जा सकता। अभिरूपित युद्ध (कृत्रिम लड़ाई जिसे वास्तविक लड़ाई का रूप समझा जाता है) आयोजित कर उन्हें वास्तविक युद्ध हेतु प्रशिक्षित किया जाता है ।

इसी प्रकार प्रशिक्षणाधीन वैमानिक (Pilot) को सीधे विमान (हवाई जहाज) चालन का अवसर तभी दिया जा सकता है जब वह उस पर नियन्त्रण पाने का वास्तविक प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी कुशलता का परिचय दे चुका हो । यह अभिरूपता परिस्थितियों में ही सम्भव है। विमान चालन व उड़ान भरने का अवसर तो कहीं बाद में आयेगा। इन को देखते हुए अभिरूपता स्थितियों की सहायता से वास्तविक परिस्थितियों से जूझने की योग्यता उत्पन्न किया जाना केवल सुगम ही नहीं, सस्ता व समायोचित है ।

डॉक्टरों को इन्जेक्शन लगाने और ऑपरेशन करने का प्रशिक्षण भी अभिरूपित परिस्थितियों में दिया जाता है ताकि वे वास्तविक परिस्थितियों में सही प्रकार से कार्य कर सकें, अन्यथा कितने ही लोग उनको प्रशिक्षण देने में काल के गाल में चले जायेंगे। अभिरूपता हमें ऐसी परिस्थितियाँ ले बचाती है और सही कौशल्य उत्पन्न करने में सहायक होती है

प्रभावी अध्यापन हेतु अध्यापक को अध्यापन प्रक्रिया का पर्याप्त अनुभव होना आवश्यक है। यह अनुभव प्राप्त करने के लिए उसे कई वर्ष तक अध्यापन करना होगा । उसे परिपक्वता प्राप्त होने तक जो छात्र उसकी कक्षा में पढ़ेंगे उनका क्या होगा ? अध्यापक के नए या कम अनुभवी होने के अनेक दुष्परिणामों का उन्हें शिकार बनना होगा। अनेक छात्रों के जीवन बर्बाद होंगे तब कहीं एक अनुभवी अध्यापक तैयार होगा। यह प्रक्रिया बहुत महँगी, दूषित एवं भयंकर है। इसी से बचने का उपाय अभिरूपित शिक्षण है ।

सूक्ष्म अध्यापन में अभिरूपता का प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है। बड़ी कक्षा की बजाय 5-6 छात्रों की कक्षा बनाई जाती है। 40 - 45 मिनट के पाठ के स्थान पर 5 से 10 मिनट का पाठ पढ़ाया है । अध्यापन की सभी प्रक्रियाओं का एक साथ उपयोग न करते हुए एक प्रक्रिया का अभ्यास एक समय में किया जाता है। वास्तविक छात्रों के स्थान पर छात्राध्यापक आपस में कक्षा समूह बनाकर अध्यापन का अभ्यास

करते हैं। इस प्रकार अध्यापन करते समय कुशल प्राध्यापक उनका निरीक्षण एवं अनुदेशन करते हैं जिससे उनके अध्यापन में निखार आता है और वे शीघ्र ही कम समय में पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लेते हैं ।

अभिरूप स्थितियाँ छात्राध्यापक को मनोवैज्ञानिक प्रोत्साहन देती है। नया अध्यापक 50- 60 छात्रों की बड़ी कक्षा को सम्हालने व पढ़ा सकने में हिचकिचाहट एवं संकोच का अनुभवकरता है जबकि 5 - 6 छात्रों की कक्षा में वह सुविधा और आत्मविश्वास का अनुभव करता है। दूसरा 50 - 60 छात्रों की बड़ी कक्षा में एक ही छात्राध्यापक के अभ्यास करने की अपेक्षा 10 छात्राध्यापक उसी समय में छोटी कक्षाएँ बनाकर अध्यापन-अभ्यास कर सकते हैं ।

कई बार अध्यापन अभ्यास हेतु वास्तविक छात्रों को ला पाना सम्भवनहीं होता तब सहपाठी छात्राध्यापकों में से 5-6 की कक्षा बनाकर ही छात्र समझ अध्यापन प्रक्रिया का अभ्यास किया जाता है। सहपाठी छात्राध्यापक छात्रों की भूमिका निर्वाह (Role Playing) करते हैं ।

1969 में क्रकशक ने छात्राध्यापकों के लिए अभिरूप प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया जिसे उसने अध्यापन समस्याओं की प्रयोगशाला का नाम दिया। इसके द्वारा छात्राध्यापकों को जीवन सादृश्य कक्षा स्थितियों में निर्णय लेने का अवसर उपलब्ध कराया गया ।

क्रकशैंक (1971) ने अभिरूपता को अध्यापन शिक्षा में प्रभावी साधन के रूप में प्रस्तुत करते हुए इसके पक्ष में निम्नलिखित पाँच बातें बताय

(1) अभिरूपता छात्राध्यापकों को साधारण एवं गहन समस्याओं को सुलझाने के अनेक अवसर प्रदान करती है जो कि शायद अभ्यासक्रम अनुभव (Field Work Experience) में सम्भव नहीं था ।

(2) इस प्रणाली से उच्च व्यय (High Cost) वातावरण का अनुभव निम्न व्यय आदर्श (Low Cost Model) से उपलब्ध कराया जा सकता है

(3) छात्राध्यापकों को कम समय में ऐसे अधिक अवसर उपलब्ध कराये जा सकते हैं, जिनमें उन्हें निर्णय लेना हो ।

(4) छात्राध्यापक को एक प्रकार के अभ्यास क्रम द्वारा ही स्कूल का विविध वातावरण अभिरूपता के द्वारा उपलब्ध कराया जा सकता है । इस प्रकार स्थान (क्षेत्र भी संकुचन सम्भव है । Space)

(5) अभिरूपता में तुरन्त प्रतिपुष्टि (Instant Feedback) की सुविधा उपलब्ध है जिससे छात्राध्यापक के अभ्यास में कारण-प्रभाव सम्बन्धों का विश्लेषण किया जा सकता है।

(1) समरूप अभिरूपता (Identity Simulation) :

अभिरूपता के प्रकार :

अभिरूपता का उपयोग विस्तृत रूप से आज सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में किया जाता है। सैनिक, चिकित्सा, शिक्षा, विमानन, प्रशासन, मेनेजमेन्ट आदि सभी क्षेत्रों में भावी अधिकारियों को सही निर्णय लेने का प्रभावी प्रशिक्षण देने में यह प्रणाली सर्वाधिक उपयोगी है । विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों को भिन्न प्रकार से है । अभिरूपता के विभिन्न प्रकार हैं - प्रस्तुत किया जाता आगे चलकर अध्यापकों को अपने व्यवसाय में जिन-जिन कठिनाइयों का सामना करना होता है उनमें एक-एक का आलेख तैयार करके छात्राध्यापकों को दिया जाता है । उन्हें बताना होता है कि इन परिस्थितियों में वे क्या करेंगे। बाद में उन्हें आपसी विचार-विमर्श द्वारा बताया जाया है कि उनके निर्णयों में क्या सही है और क्या गलत है। सूक्ष्म पाठ में भी वे अपने 5-6 छात्रों से क्या प्रश्न पूछेंगे, उनके उत्तर क्या होंगे, छात्र कैसे-कैसे प्रतिप्रश्न पूछेंगे, आदि सारी बातों का पूर्वानुभव कर सूक्ष्म पाठ योजना बनाना भी सरूप अभिरूपता है । इसमें व्यक्ति अपने आपको आनेवाली परिस्थितियों में रखकर अपने कार्य की योजना तैयार करता है ।

(2) प्रायोगिक अभिरूपता (Laboratory Simulation)

बड़े उत्पादक अपना उत्पादन बाजार में लाने से पूर्व छोटे पैमाने पर अनेक प्रकार के परीक्षण करते हैं जिनसे उन्हें आनेवाली कठिनाइयों, उपभोक्ताओं की पसन्द, होने वाले लाभ आदि का कुछ ज्ञान प्राप्त होता है जिसका उपयोग वह बृहत् उत्पादन के समय करते हैं। इस अभिरूपता को प्रायोगिक अभिरूपता कहते हैं

जब भी किसी औषधि की खोज होती है, विशाल पैमाने पर उसके उत्पादन से पूर्व हजारों लोगों पर उसका परीक्षण कर उसकी उपयोगिता एवं उससे होने वाले बुरे प्रभावों का अध्ययन किया जाता है तब कहीं सुधार के उपरान्त बृहत् उत्पादन किया जाता है

शिक्षा के क्षेत्र में भी विभिन्न शिक्षण विधियों एवं अध्यापन सहायक साधनों का छोटे पैमाने पर प्रयोग किया जाता है। सफल होने पर उसका बृहत् उपयोग हेतु प्रचार किया जाता है। सूक्ष्म अध्यापन की कक्षायें, कम समय कम विषयवस्तु एवं एक समय एक अध्यापन कौशल का अभ्यास इसी प्रकार की अभिरूपता है

(3) विश्लेषणात्मक अभिरूपता (Analytical Simulation)

किसी भी समस्या अथवा कार्य को लेकर उसके विषय गहन विचार करना कि समस्या का स्वरूप क्या है, इसके कारण क्या उसके क्या परिणाम होंगे, समस्या को कैसे टाला जाये या समाधान किया जाये और फिर विश्लेषणात्मक निर्णय लेकर क्या कार्य अपनाई जाये, विश्लेषणात्मक अभिरूपता कहलाता है। छात्राध्यापकों में विश्लेषणात्मक निर्णय लेने की क्षमता पैदा करने हेतु उन्हें अध्यापन काल में आने

वाली विभिन्न समस्याओं और कार्यों से अवगत कराते हैं। उनके व्यक्तिगत विश्लेषण और निर्णयों की जाँच कर उन्हें उचित परामर्श देते हैं ताकि उन्हें अपने विश्लेण व निर्णयों के औचित्य का भली प्रकार ज्ञान हो और वे समय आने पर सही निर्णय ले सकें

(4) व्यक्ति अध्ययन अभिरूपता (Case Study Simulation)

छात्राध्यापकों के सामने किसी छात्र के समस्यात्मक व्यवहार की के स्टडी रखी जाती है जिस पर छात्राध्यापक को उपचारात्मक निर्णय (Remedial Decision) देने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस केस

से सम्बन्धित विभिन्न छात्राध्यापकों के निर्णयों को एक-एक कर छात्राध्यापकों के समूह के सामने प्रस्तुत करते हैं। वे इस पर विचार- विमर्श कर सामूहिक निर्णय देते हैं । प्राध्यापक भी अपना निर्णय देते है। विचार-विमर्श के उपरान्त कुछ सही एवं उचित लगने वाले निर्णय चुन लिए जाते हैं और उनकी व्याख्या करते हैं। किसी एक व्यक्ति अध्ययन (Case Study) को लेकर उस पर अभिरूपित विचार को व्यक्ति- अध्ययन अभिरूप कहते हैं।

इसका उपयोग उच्च कोटि के प्रशिक्षणों में किया जाता है जहाँ व्यक्कियों एवं उनकी समस्याओं पर निर्णय लेने की सम्भावना होती है। उपचारात्मक कार्य प्रणाली (Remedial) अपनाने से यह प्रक्रिया बहुत ही पाई गई है।

(5) भूमिका निर्वाह (Role Playing) :

किसी भी घटना या समस्या को भली प्रकार सुलझाने के लिए आवश्यक होता है कि विभिन्न व्यक्तियों के दृष्टिकोणों को, जिनका इस घटना या समस्या से सम्बन्ध है, भली प्रकार समझा जाए। इसके उपरान्त जो निर्णय लिया जायेगा वह सभी को मान्य होगा और सभी पर प्रभावी होगा। उदाहरणार्थ, यदि हम यही लें कि विद्यालय में यूनीफॉर्म सभी छात्रों के लिए अनिवार्य करनी है तो आदेश लागू करने से पूर्व इस समस्या से सम्बन्ध रखने वाले सभी व्यक्तियों - प्रधानाचार्य, अध्यापक, छात्र, बालक, नागरिक आदि सभी के पक्ष को भली प्रकार समझा जाए तो निर्णय को सर्वमान्य रूप से लागू करना सम्भव होगा। इन पक्षों को समझाने के लिए विभिन्न व्यक्ति अलग-अलग भूमिका निर्वाह करते हैं। एक प्रधानाचार्य का रोल करता है, दो-तीन अध्यापक का, दो-तीन छात्रों का । कुछ अभिभावक एवं नागरिक बनकर अपने रोल पर विचार कर भूमिका निर्वाह करते हैं। इसमें जो-जो बातें सामने आती हैं वे ही लगभग वास्तविक स्थिति में सामने आयेंगी। उनका पहले से ही समाधान कर देने पर बाद की कठिनाइयों से बचा जा सकता है।

अभिरूपता के इन विभिन्न प्रकारों का आवश्यकतानुसार उपयोग अध्यापक प्रशिक्षण में किया जा सकता है। किस प्रकार की अभिरूपता सहायक होगी, इसका निर्णय समस्या के स्वरूप छात्राध्यापकों की योग्यता

एवं क्षमता, अभ्यास हेतु समय आदि पर निर्भर करेगा। शिक्षा में प्रशासकों, व्यवस्थापकों आदि के लिए भी ऐसे ही अभिरूपित अभ्यासों को सेवान्तर्गत कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जा सकता है। सेना उद्योग एवं व्यापार- व्यवस्थापन (Management) में अभिरूपता का व्यापक प्रयोग होता है, ताकि व्यवस्थापकों में सही व शीघ्र निर्णय लेने की कुशलता उत्पन्न की जा सके। शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका उपयोग उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है ।

अभिरूपता का सबसे बड़ा लाभ है कि यह अपव्यय को रोकता है। उद्योग में पहले ही अभिरूपता का सहारा लेकर औचित्य निर्धारण एवं जन स्वीकार्यता सर्वेक्षण के कारण अब अपव्यय नहीं होता । दवाओं को चूहे, खरगोशो एवं अन्य जानवरों पर प्रयोग कर उन पर प्रभाव को ध्यान में रखते हुए सीमित तौर पर मनुष्यों पर प्रयोग किया जाता है । तब कहीं ये दवा बाजार में उपलब्ध होती हैं । शिक्षा का क्षेत्र और भी सीमित है। हम बालकों पर प्रयोग कर उन्हें हानि नहीं पहुँचाना चाहते, अभिरूपता का सहारा लेकर हम प्रयोग करते हैं और फिर उससे ज्ञान प्राप्त कर छात्रों पर इसे आजमाया जाता है ।

अभिरूपता सूक्ष्म अध्यापन का प्रमुख आधार है। इससे समय की, अप्रत्यक्ष रूप से व्यय होने वाले धन की और परिश्रम की बचत होती है कम मेहनत, कम व्यय और कम समय में इससे अधिक लाभ होता है। परन्तु इस विधि को अपनाने के लिए समुचित तैयारी करनी होती है । पूर्ण अभ्यास एवं नियोजन की भी आवश्यकता है । पर्याप्त समय व उचित अभ्यास भी उपलब्ध होने चाहिए । इन्हीं से अभिरूपता की उपयोगिता बनती है ।

1.2 सूक्ष्म अध्यापन के कौशल्य

(विषयाभिमुख श्यामफलक, प्रश्नप्रवाहित, सुदढीकरण. उदाहरण)

विषयाभिमुख कौशल का अर्थ :

शिक्षक को जिस विषय या विषयांग संबंधित इकाई सिखानी हो उसके प्रति छात्रों को अभिमुख या अभिप्रेरित करने वाले कौशल को पाठ प्रारंभ कौशल कहते हैं । इन कौशल को सफल बनाने हेतु प्रश्नोत्तरी व्याख्या प्रबलन, उद्दीपन परिवर्तन आदि कौशलो का उपयोग किया जा सकता है ।

विषयाभिमुख कौशल के हेतु :

- छात्रों को नूतनज्ञान प्राप्ति हेतु तत्पर किया जा सकता है।
- इकाई संबंधित छात्रों की समझ को जोड़ा जा सकता है।
- छात्रों के ज्ञान के साथ नए ज्ञान को जोड़ने हेतु तार्किक अभिगम बनाया जा सकता है ।
- छात्रों के पूर्वज्ञान और नूतन ज्ञान की कमी को दूर कियाजा सकता है।
- छात्रों को कक्षाध्यापन में हिस्सा लेने का अवसर प्राप्त होता है।

- छात्र सरलता से नूतनज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं।

ज्ञानात्मक पक्ष ही कक्षागत शिक्षण में सर्वाधिक प्रयोग होता है। इसके बाद आम तौर पर प्रयोग में आनेवाली वांछित रूचियाँ, अभिरूचियाँ एवं परिबोध का निश्चित दिशाओं में विकास किया जाता है ।

पूर्वज्ञान का उपयोग :

छात्र स्कूल में आता है उसके पहले वह अपने घर से, दोस्तों से, आस-पड़ोस से या वातावरण एवं परिस्थिति से अनेक अनुभव प्राप्त करके ज्ञान प्राप्त कर लेता है। यहीं अनुभव के द्वारा प्राप्त ज्ञान ही इकाई संबंधित पूर्वज्ञान कहलाता है। शिक्षक नए ज्ञान को छात्रों के ज्ञान के साथ जोड़कर छात्रों को सबल बनाना चाहिए । इसके लिए विषयांग के अनुरूप शिक्षक को इकाई की पूर्ण समझदारी प्राप्त करके विविध आयामों द्वारा छात्रों के ज्ञान, उम्र, कक्षा, मानसिकता आदि को ध्यान में रखकर पूर्वज्ञान का उपयोग करना चाहिए ।

योग्य प्रयुक्तियों का उपयोग :

शिक्षक कक्षा में छात्रों के समक्ष नई इकाई के पूर्व ज्ञान ढूँढने के बाद निम्न प्रकार की युक्तियों का प्रयोग किया जाता है विन्यास प्रेरण (पाठ प्रारंभन) साधारण प्रश्नों से किया जाता है। अध्यापक कहानी सुनाकर, चित्र या मॉडल दिखाकर पाठ का प्रारंभ करने की इस प्रकार है ।

(1) उदाहरण दृष्टांत आदि

(2) प्रश्न

(3) कहानी

(4) नाट्यकरण या भूमिका निर्वाह

(5) दृश्य-श्राव्य साधनों का उपयोग

(6) प्रयोग / प्रदर्शन

इन प्रयुक्तियों में से छात्रों की वय, अभिरूचि आदि के आधार पर एक या एक से अधिक प्रयुक्तियों का उपयोग करके शिक्षक कक्षाध्यापन कर सकता है । सामान्यतः छोटी कक्षाओं में प्रश्न, उदाहरण, दृष्टांत प्रयुक्तियाँ अधिक सफल होती है ।

अवांछित व्यवहार :

निम्न प्रकार की क्रियाएँ विन्यास प्रेरण में बाधक होती है । यह न की जाएँ या कम की जाएँ - -

(1) सातत्य की कमी :

जो विचार/विषयवस्तु पहले पढ़ाये जा रहे थे उन संबंधित विषय पढ़ाने से या उनके क्रम मे ही आज पढ़ाने से सातत्य (Continuity) गुण प्राप्त किया जा सकता है ।

- पाठ के आरंभ करते समय तार्किक क्रम के बिना प्रश्न पूछने पर
- शिक्षक पहले पूछे गए प्रश्न के अनुसंधान दूसरा प्रश्न न करने पर
- पाठ के प्रारंभ में शिक्षक द्वारा इकाई से जुड़ा प्रश्न न होने पर सातत्य की कमी स्पष्ट नजर आती है। फलस्वरूप छात्र असमंजस में रहते हैं कि क्या उत्तर दे ?

शिक्षक के वर्तन में सातत्य की कमी तब नजर आती है जब कि विचारो में क्रमिकता न हो एवं जानकारी की कमिकता बांध न सकने पर यह सब कुछ होता है ।

सातत्य की कमी कब मालूम होती है ?

छात्र गलत उत्तर देते है तब ।

छात्र असमंजस में होने पर उत्तर न दे पाने पर ।

छात्रों के चहरे पर परेशानियाँ (असमंजस) झलकती दिखाई दे तब की कमी है ऐसा मालूम होता है।

(2) अप्रासंगिक कथन या प्रश्न पूछना

अप्रासंगिक कथन या प्रश्न पूछना अध्यापक को वही प्रश्न पूछने चाहिए अथवा वो ही विवरण देना चाहिए जो पाठ्य-वस्तु से संबंध रखते हो । प्रासंगिक प्रश्न न कथन तो विन्यास प्रेरण में सहायक होते हैं और अप्रासंगिक कथन या प्रश्न इकाई के विषय में बाधक होते हैं। इन्हें जितना हो टालने का या कम से कम उपयोग करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। पाठ प्रारंभ के दौरान ज्ञानात्मक या संवेगात्मक सेतु की रचना हो यह आवश्यक है ।

2.3.2 श्यामपट कौशल्य

कक्षाध्यापन में दृश्य साधन के रूप में श्यामपट ही सर्वाधिक प्रयोग में आता है। श्यामपट का उचित, सही एवं विधिपूर्वक उपयोग पाठ को प्रभावशाली बनाने में बहुत सहायक होता है । अध्यापक को श्यामपट कार्य में पारंगत होना चाहिए ताकि वह इस साधन का कुशलतापूर्वक उपयोग कर पाठ को सफल बना सके । शिक्षक के कक्षाध्यापन का लिखित प्रलेख (Written Document) है ।

श्यामपट उपयोग कौशल्य का अर्थ :

प्रभावशाली श्यामपट कार्य करने वाले शिक्षक के कौशल को श्यामपट कौशल कहते हैं ।

तीन विशेषताए श्यामपट कौशल का महत्त्व :

श्यामपट कृष्णफलक या चोक फलक भी कहते हैं। श्यामपट कार्य करने से......

- इकाई संबंधी लिखित स्पष्टता होती है ।
- आकृति, रेखाचित्र, आलेखन, मानचित्र (Maps) आदि को सरलता से समझाया जा सकता है ।
- अध्यापन कार्य क्रमिक होता है ।
- शिक्षक द्वारा प्राप्त उत्तरो के मुद्दों को श्यामपट पर लिखने से इकाई की नियोजित पुनरावृत्ति (Planned Repetition) होने से छात्र सरलता से समझ सकते हैं।
- अध्यापन प्रक्रिया में स्पष्टता एवं सटिकता लाई जाती है।
- श्यामपट पर इकाई के मुद्दो का अंकन होता है ।
- महत्वपूर्ण मुद्दों पर छात्रों का ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है ।
- अपरिचित शब्द, परिभाषाएँ, पंक्तियाँ, कहावतें, मुहावरें नियम सूत्र प्रयोग, आकृतियाँ सरलता से समझा सकते हैं।
- श्राव्य से अधिक दृश्य की असर लंबे समय तक रहती है।
- इकाई के विकास को जान सकते हैं।
- गणित के सवालों के लिए सर्वाधिक उपयोगी है।

श्यामपट कार्य कौशल के घटक :

श्यामपट कार्य कौशल में निम्नलिखित बातों का उपयोग किया जाता है।

हस्ताक्षरों की सुवाच्यता (Legibility of Hand Writing)

श्यामपट कार्य की स्वच्छता (Leafness in Black Board Work)

श्यामपट कार्य की कुशलता (Appropriateness in Black Board Work)

(1) हस्ताक्षरों की सुवाच्यता (Legibility of Hand Writing) :

- प्रत्येक अक्षर स्पष्ट (Distinct) होना चाहिए। यानि की श्यामपट पर लिखे अक्षर एक दूसरे के बराबर व एकसी दूरी पर होने चाहिए
- अक्षरों में जहाँ आवश्यक हो वहाँ अंतराल (Interval)देना चाहिए ।
- अक्षरों का आकार एक सा होना चाहिए ।
- अक्षरों के मरोड़ योग्य होने चाहिए। जैसे, म –भ- क-फ- प-य- त-न- व- ब- ट- ठ- य-थ- - आदि ।
- अक्षरों का झुकाव (Shantness) एक सा ही होना चाहिए। श्यामपट कार्य करते समय लेखन कार्य तीरछा नहीं जाना चाहिए।

(2) श्यामपट कार्य की स्वच्छता (Neatness in Black Board Work) :

- श्यामपट कार्य सीधी लाईन में लिखा होना चाहिए। हाथ ऊपर करके जितनी सरलता से लिख सकें वहाँ से लेखन कार्य की शुरूआत करनी चाहिए
- श्यामपट लेखन कार्य 45° के कोण पर खड़े रहकर करना चाहिए ।

- लेखन कार्य करते समय शब्द समूह एवं वाक्य सीधी लाइन में और श्यामपट के आधार के समान्तर हो । इन लाइनों के मध्य की दूरी एक सी हो ।
- लेखन कार्य करते समय अक्षर स्पष्ट लिखने चाहिए ताकी कक्षा में पीछे बैठे छात्र भी सरलता से वाचन कर सके।
- श्यामपट लेखन कार्य करते समय शब्दों या वाक्यों काअत्यालेख (Overwriting) नहीं करना चाहिए।
- श्यामपट लेखन कार्य में विशेष मुद्दों को रंगीन चॉक द्वारा अलग करना चाहिए एवं जरूरत वाले शब्दों के नीचे रेखा खीचनि चाहिए
- लेखन साफ करने हेतु झाड़न (Duster) का ही उपयोग
- करना चाहिए। कभी हाथ से श्यामपट लेखन साफ नहीं करना चाहिए।

श्यामपट कार्य की कुशलता (Appropriateness inBlack Board Work) :

- श्यामपट पर लेखनकार्य स्पष्ट एवं मुद्दों के आधार पर संक्षिप्त होना चाहिए ।
- लेखनके मुद्दे क्रमिक एवं तार्किक तथा सातत्यपूर्ण होने चाहिए।
- पाठ चर्चा के दौरान पाठ विकास के साथ श्यामपट पर मुद्दे लिखने चाहिए ।
- विशेष मुद्दों को रंगीन चौक से अंकित करे या विशेष शब्दों के नीचे रेखांकन करे ।
- लेखन कार्य करते समय हिज्जों की शुद्धि होनी चाहिए।
- लेखन कार्य क्षतिरहित करना चाहिए ।

श्यामपट कार्य करते समय ध्यान में रखने योग्य बातें :

- श्यामपट प्रकाश की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए ।
- श्यामपट का स्थान कक्षा के मध्य में होना चाहिए ताकि सभी छात्र श्यामपट लेखन कार्य सरलता से देख सकें ।
- कक्षा में प्रवेश करने के बाद सबसे पहले श्यामपट का लेखन साफ कर देना चाहिए ।
- श्यामपट झाड़न से ऊपर से नीचे की तरफ साफ करें ताकि चौक के कण आप पर न पड़े ।
- श्यामपट पर लेखन कार्य करके एक तरफ खड़े रहे ताकि छात्रों को लेखन कार्य देखने में लिखने में तकलीफ न पड़े ।
- श्यामपट कार्य करते समय चोंक की आवाज चूँ... चूँ नहो ।
- लेखन कार्य करते समय हिज्जे दोष एवं जानकारी दोष न हो इसका पूरा ख्याल रखें ।
- लेखन कार्य सुंदर अक्षरों में करें जहाँ जरूर हो वहाँ रंगीन चोक का उपयोग करें या उन्हें रेखांकित करे ।
- मुद्दे क्रमश: इस प्रकार लिखे इकाई विकास स्पष्ट रहे
- गणित आदि विषयों में श्यामपट को दो हिस्सो में बनाकर कार्य करें ।
- आकृति बनाने हेतु शैक्षणिक साधनों का उपयोग करें ।
- आकृति या चित्र बड़े बनाए ताकी अंतिम छोर पर बैठे छात्र भी सरलता से समझ सके ।
- अक्षरो वाक्यों पर अत्यालेख (Over writing) न करें। श्यामपट हाथ से साफ न करें झाड़न (Duster) का उपयोग करें ।

2.3.3 प्रश्न प्रवाहिता कौशल्य

आदि काल से ही मानव जिज्ञासा की संतुष्टि प्रश्नोत्तर से ही होती रही है। आज भी अध्यापक प्रश्न पूछते हैं, छात्र उत्तर देते हैं। अध्यापक छात्रों से इसलिए प्रश्न पूछता है कि उन्होंने कितना ज्ञान ग्रहण किया। शिक्षक पाठ्यवस्तु के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए प्रश्न है । इस प्रश्नकला के कई पक्ष है 'सहजता' उनमें से एक है। कृष्ण ने गीता में कहा है कि ज्ञान प्राप्ति का मार्ग परिप्रश्नेन सेवया है।' सोकेटिस के जमाने से आजदिन तक प्रश्नोत्तरी प्रयुक्ति का उपयोग हो रहा है। कोल्विन के मतानुसार प्रश्न सहजता उत्तम उत्तेजक बिन्दु है। अध्यापन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

निर्धारित समय में शिक्षक महत्तम संख्या में संक्षिप्त स्पष्ट एवं विषय के अनुरूप भाषाकीय दृष्टि से शुद्ध प्रश्नों को पूछने की प्रक्रिया द्वारा उत्तरों को प्राप्त करने की प्रवीणता को प्रश्न सहज कौशल कहा जाता है।

"By fluency in questioning we mean the rate of asking meaningful questions put per unit of time.."

महत्त्व :

अध्यापन कार्य के लिए प्रश्न पूछने का कौशल अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस कौशल के कारण शिक्षक का अध्यापन कार्य असरकारक बनता है ।

- प्रश्न कौशल से छात्रों के पूर्वज्ञान की कसौटी होती है
- किसी विषय की इकाई संबंधित घटक को विस्तार से समझाया जा सकता है ।
- इकाई संबंधित मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है ।
- छात्रों की जिज्ञासावृत्ति सतेज की जा सकती है।
- छात्रों को सिखाई गई बातें (इकाई) उन्होंने सीखी है या नहीं जान सकते ।
- सूक्ष्म अध्यापन छात्रों की तर्कशक्ति और विश्लेषण शक्ति का विकास होता है ।
- छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित कर सकते हैं
- कथनसे छात्रों को बोरियत होती है प्रश्न सहजता से नहीं।
- अध्यापन कार्य असरकारक होता है ।

प्रश्न सहजता कौशल के घटक :

हमें प्रश्न सहजता कौशल के लिए निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

- समय सीमा तय होती है ।
- समय सीमा में रहकर अधिक से अधिक तार्किक प्रश्न पूछने चाहिए ।
- भाषाकीय दृष्टि से प्रश्न संक्षिप्त, स्पष्ट एवं विषय के
- नुरूप होने चाहिए । प्रश्न अर्थपूर्ण होने चाहिए ।

अच्छी संरचना में निम्न प्रकार के तीन घटकों का उपयोग किया जाता है

- प्रश्न का ढाँचा (Structure) भाषाकीय दृष्टिकोण से संक्षिप्त, स्पष्ट एवं इकाई से जुड़े प्रश्न होना आवश्यक है।
- प्रश्न पूछने की प्रक्रिया (Process)
- प्रश्नों से संबंधित उत्तर प्राप्त करना (Product)

प्रश्न का ढाँचा (Structure) :

- प्रश्न व्याकरण की दृष्टि से एवं भाषाकीय दृष्टि से स्पष्ट होने चाहिए
- प्रश्न संक्षिप्त एवं स्पष्ट होने चाहिए।
- प्रश्न इकाई आधारित होना चाहिए।
- प्रश्न का कोई एक स्पष्ट उत्तर होना चाहिए।
- प्रश्न कमिक होने चाहिए एवं एक दूसरे के पूरक होने चाहिए।
- प्रश्न तर्कबद्ध एवं सटिक होने चाहिए। जैसे :

गांधीजी का जन्म कहाँ हुआ था ?

हमारे देश के प्रधानमंत्री कौन है ?

हम स्वातंत्र्य दिन कब मनाते है ?

हमारे शरीर के मुख्य अंग कौन-कौन से है ?

उपरोक्त प्रश्न संक्षिप्त एवं भाषा की दृष्टि से शुद्ध हैं जो सटिक उत्तर प्राप्त हैं।

आप में से कौन जानता है कि भारत के प्रधानमंत्री कौन है ? उपरोक्त प्रश्न अवांछित है अप्रासंगिक है इस प्रश्न में बहुत से शब्द ज्यादा है ऐसे बिनजरूरी शब्दों को टालना चाहिए एवं प्रश्न स्पष्ट रूप से संक्षिप्त पूछने चाहिए कि भारत के प्रधानमंत्री कौन है ? कुछ प्रश्नों के बहुत सारे उत्तर प्राप्त सकते हैं।

जैसे : इन्दिरा गांधी कौन थी ?

सूर्यग्रहण क्या है ?

इन प्रश्नों के अनेक उत्तर हो सकते है इनके उत्तर अस्पष्ट मिल सकेंगे आपके अपेक्षित उत्तर शायद न भी हो ऐसे अवांछित नहीं पूछने चाहिए।

शिक्षक 'वृक्ष हमारे मित्र' इकाई पढ़ाते समय निम्न प्रकार के

प्रश्न पूछता है तो वे कितने सुसंगत है यह जाने......

हम वनमहोत्सव क्यों मनाते है ?

वृक्ष हमारे लिए कैसे उपयोगी है ?

वृक्षों के कौन-कौन से अंग है ?

पनों के कौन-कौन से प्रकार है ?

डाली की रचना कैसी होती है ?

उपरोक्त प्रश्नों को पढ़ने से सात होगा की पहले दो प्रश्न इकाई से सुसंगत है बाकी के तीन प्रश्न असंगत है।

प्रश्न पूछने की प्रक्रिया (Process) :

प्रश्न पूछने की प्रक्रिया यानि की शिक्षक द्वारा कक्षाध्यापन करते समय छात्रों के समक्ष प्रश्न पेश करना और उनसे उत्तर प्राप्त करना । प्रश्न पूछते समय शिक्षक को निम्न प्रकार की याती का विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रश्न सभी छात्रों को ध्यान में रखकर पूछना चाहिए । ताकी सभी छात्र उत्साह से चर्चा में हिस्सा ले सके। वे उत्तर देने हेतु कक्षा में सक्रिय बन सके। किसी एक छात्र को खड़ा करके प्रश्न पूछने नहीं चाहिए और न ही उससे ही उत्तर प्राप्त करना चाहिए।

- शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्न के बाद छात्रों को सोचने का समय देना चाहिए ना कि दूसरी बार उस प्रश्न का पुनरावर्तन करें। कभी-कभी छात्र इससे बेध्यान हो जाते है और सही उत्तर दे नहीं सकते
- शिक्षक की अपेक्षा में छात्र छोटे हैं अतः प्रश्न पूछने के बाद उत्तर प्राप्त करने हेतु धीरज रखनी चाहिए ।
- कई बार शिक्षक प्रश्न अति शीघ्रता से पूछते है या तो अति मंद गति से प्रश्न पूछते है। फलस्वरूप छात्र प्रश्न को समझ नहीं पाते है और उत्तर नहीं दे पाते। इसलिए शिक्षक को प्रश्न पूछते समय योग्य गति रखकर
- प्रश्न पूछने चाहिए एवं कक्षा के सभी छात्र सरलता से सुन सके ऐसी आवाज में प्रश्न पूछना चाहिए।
- प्रश्न पूछते समय शिक्षक की आवाज कक्षा में अंतिम बेंच पर बैठे छात्र तक पहुँच सके ऐसी होनी चाहिए ।
- प्रश्न पूछते समय विशेष शब्दों पर जोर देकर सुश्राव्य एवं ध्वनि माधुर्य पूर्ण आवाज में प्रश्न पूछने चाहिए ।
- प्रश्न पूछते समय कुछ ऐसे प्रश्न होते है जिन के शब्दों पर जोर देने से प्रश्न छात्र सरलता से समझ सकते है। और प्रश्न के हार्द पर ध्यान केन्द्रित कर सकते है ।
  जैसे :- महेश को नरेश ने अपने घर पर क्यों बुलाया ?
  पर्यावरण की रक्षा कौन करता है ?
- कभी-कभी शिक्षक छात्रों की क्षमता से कहीं अधिक बौद्धिक प्रश्न पूछता है ऐसे ऊँचे स्तर के प्रश्न से छात्र अस्मंजस में पड़ जाते है और उत्तर नहीं दे पाते है ।
- प्रश्न सहजता से तात्पर्य निश्चित समय इकाई में अधिक से अधिक अर्थपूर्ण प्रश्न पूछे जाने से है । प्रश्न सभी अर्थपूर्ण होते हैं, जब उनमें ये गुण हो - उनकी भाषा शुद्ध हो, प्रासंगिक हो, विशिष्ट एवं संक्षिप्त हो, उचित प्रक्रिया से पूछे गये हों अर्थात् उनकी गति उचित हो, स्वर स्पष्ट हो, उचित ढंग से कहे जाए। प्रश्नों के उत्तर- छात्र ढंग से दे पाएँ इसके लिए उन्हें प्रश्न समझ आने चाहिए और अध्यापक व छात्रों में सामंजस्य हो ।

प्रश्न निष्पत्ति :

छात्रों द्वारा प्रश्नों के उत्तर मिलना प्रक्रिया को प्रश्न निष्पत्ति (Out come) कहते है कभी-कभी अध्यापक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के अपेक्षित उत्तर नहीं भी मिल पाते है। इसके लिए निम्नलिखित कारण हो सकते है।

- प्रश्नों की कठिनता ज्यादा हो ।
- छात्र बेध्यान होने पर । छात्रों को विषय में या इकाई संबंधि रूचि पैदा न हुई हो ।
- छात्र और शिक्षक के हुई हो।
- प्रश्न श्रतियुक्त हो ।

छात्रों के अनुसरत के कारण देकर उन्हें दूर करने हर । इसके लिए सर्वश्रण एवं मार्गदर्शक के साथ परामर्श करके प्रती का स्वयता चाहिए।

कैसे-कैसे प्रश्न पूछे जाए :

- ✓ 'हो' या 'नहीं' में उत्तर अत हो ऐसे में के जान समझ की कसौटी नहीं होती है।
- ✓ जैसे: यह चित्र सुंदर है ? हा
- ✓ यह चौकोर आकृति है ? - उत्तर 'नहीं'

इसके बदले ऐसे प्रश्न पूछे ।

- ✓ इस चित्र में क्या-क्या है ?
- ✓ यह चित्र आपको कैसा लगा है ?
- ✓ पृथ्वी का आकार कैसा है ?
- ✓ थाली का आकार कैसा होता है?

इस प्रकार के प्रश्न पूछने पर छात्र ज्ञान, समझ आदि के आधार पर उत्तर देते है ।

सूचक प्रश्न न पूछे (Suggestive Questions) :

जैसे: स्वर नरम होता है या सख्त ?

यह आकृति गोल है या त्रिभुज ?

उपरोक्त प्रश्नों में ही उत्तर समाविष्ट है। इसलिए छात्रों को कुछ भी सोचना ही नहीं पड़ता। वे तुरंत प्रश्न में से ही उत्तर दे देते है। ऐसे प्रश्न कक्षाध्यापन के समय नहीं पूछने चाहिए।

प्रतिघोष प्रश्न न पूछे (Eco Questions) :

जैसे : गांधीजी का जन्म पोरबंदर में हुआ था ।

प्रश्न : गांधीजी का जन्म कहाँ हुआ था ।

अकबर के पिता का नाम हुमायूँ था ।

प्रश्न : अकबर के पिता का नाम क्या था ?

इस प्रकार के प्रश्न प्रतिघोष प्रश्न कहलाते हैं । शिक्षक पहले छात्रों को इकाई से जुड़ी बात करता है और तुरंत कही गई। बात के आधार पर प्रश्न पूछता है उसे प्रतिघोष प्रश्न कहते है । इस प्रकार के प्रश्नों से कोई फायदा नहीं होता हैं

अनुमान पोषक प्रश्न न पूछे (Guessing Questions) : जैसे :

इक्कीसवीं सदी में भारत की जनसंख्या कितनी होगी ?

दुनिया नष्ट हो जाए तो क्या होगा ?

इस प्रकार के प्रश्नों का कोई अर्थ ही नही होता है। छात्र अनुमान के आधार पर कुछ भी उत्तर दे देते हैं । इन प्रश्नों से कुछ भी हांसिल नहीं होता । अतः इस प्रकार के प्रश्न से बचे ।

समर्थन या हामी वाले प्रश्न न पूछे (Supporting जैसे :

वनस्पति श्वासोश्वास की क्रिया करती हैं । - सही है ?

लोहे के खंभे में करंट लग सकता है । सही है ?

इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षक के विधान का छात्रों द्वारा उत्तर में समर्थन ही देना होता है और वे उत्तर में सिर्फ 'हाँ' ही कहते है । ऐसे प्रश्नों का कोई अर्थ नहीं निकलता अतः ऐसे कक्षा में न करें ।

क्षोभ युक्त प्रश्न न पूछे : जैसे :

लड़के से आप को लड़की के कपड़े पहनाएँ जाये तो कैसा महसूस करेंगे ?

कक्षा में प्रजोपत्ति के आधारित प्रश्न पूछने पर भी छात्र क्षोभ का अनुभव करते है ।

अत: कक्षा में इस प्रकार के प्रश्न न पूछे जाए ।

इस प्रकार कुछ संवेदनशील प्रश्न से अकल्पनीय परिस्थितियाँ पैदा हो सकती है । अतः छात्र पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थता बताते है । शिक्षक द्वारा ऐसे प्रश्नों को संभवत: पेश नही करने चाहिए। बल्कि कक्षा अध्यापन को अधिक कआ में असरकारक बनाने हेतु असरदार प्रश्न ही पूछे जाए ।

2.3.5 उदाहरण (दृष्टांत) कौशल्य

उदाहरण / दृष्टांत का अर्थ :

पदार्थ या परिस्थिति जिनमें सिद्धांत, विचार या ख्याल का उपयोग होता है उसे दृष्टांत कहते हैं ।

Examples are situations or in which principles, ideas or concepts are being applied.

दृष्टांत के रूप में : प्रवाही का भाप बनकर उड़ना (बाष्पीभवन- eveporation) का ख्याल देने के लिए गीले कपड़े सूखना, पेट्रोल, स्प्रीट या थीनर जैसे प्रवाही खुल्ले में रखने पर उड़ जाना । इस प्रकार ख्याल स्पष्ट करने को दृष्टांत कहा जाता है ।

उदाहरण / दृष्टांत कौशल का अर्थ :

शिक्षक के अमूर्त विचारों या अमूर्त विषयवस्तु को दृष्टांत या उदाहरणों के द्वारा पेश करने के कौशल को दृष्टांत कौशल कहा जाता है ।

"The skill of Illustrating with examples involves discribing an idea, concept of principle by using various types of examples.'

दृष्टांत ऐसे होने चाहिए जो समझ में आ सके, प्रासंगिक हों और छात्रों को रूचिकर लगे ऐसे बोधगम्य हो ।

उदाहरण / दृष्टांत कौशल का महत्त्व :

- शिक्षा में दृष्टांत कौशल का उपयोग करने से छात्रों का में ध्यान केन्द्रित होता है ।
- छात्रों को शिक्षाकार्य में रूचि पैदा होती है ।
- छात्रों को ज्ञात से अज्ञात की ओर लें जाया सकता
- छात्रों की समझ शक्ति और अर्थग्रहण शक्ति का विकास होता है ।
- कठिन मुद्दों को दृष्टांत द्वारा सरल बनाया जा सकता है।
- ख्याल या विचार का स्पष्टिकरण होता है ।
- छात्र सक्रिय रूप से शिक्षण में हिस्सेदार बनते हैं ।
- कथन सरल, स्पष्ट एवं रूचिकर बना सकते हैं ।

उदाहरण / दृष्टांत कौशल के लक्षण :

(1) सरल (Simple) : जहाँ तक संभव हो दृष्टांत अत्यंत सरल होने चाहिए । दृष्टांत छात्रों के पूर्वानुभव या पूर्वज्ञान आधारित होने चाहिए। छात्रों के पूर्वज्ञान आधारित दृष्टांतों के कारण वह अध्ययन में अधिक रूचि रखने लगता है और अधिक उत्साहित होकर शिक्षण कार्य में सहायक होता है ।
(2) सिद्धांत, नियम या ख्याल के साथ सुसंगत हो (Relevant) : जिन दृष्टांतो का उपयोग सिद्धांत, नियम या ख्याल के साथ स्पष्ट किया जाता है और जो उनके साथ संलग्न होते हैं वे ख्याल सुसंगत कहलाते है
(3) रूचिकर (Interesting) : दृष्टांत सामान्य तौर पर छात्रों को रूचिकर हो ऐसे होने चाहिए। रूचिकर दृष्टांत होने के कारण छात्र सरलतापूर्वक इकाई चर्चा में हिस्सा ले सकते हैं। छात्रों की उम्र के हिसाब से उदाहरण होने पर शिक्षा कार्य रूचिपूर्ण बनता है ।

(4) दृष्टांत की पेशकश : अच्छा उदाहरण प्राप्त करने के बाद उन्हें असरकारक ढंग से पेश करते समय दो बातों की तरफ विशेष ध्यान रखना ।

(i) दृष्टांत पेश करने का माध्यम (ii) दृष्टांत पेश करने की पद्धति

(i) दृष्टांत पेश करने का माध्यम

(1) अशाब्दिक (2) शाब्दिक

अशाब्दिक माध्यम

- वास्तविक वस्तुओं का उदाहरण स्वरूप दिखाया जासकता है; जैसे आदि फूल, पत्ते, मिलाय, धर्मामीटर आदि
- मोडल ऐसे आदर्श मोडल तैयार किए जाते हैं जिसके सहारे किसी विचार एवं सिद्धांत की परिभाष की जाती है ।
- मानचित्र व रेखाचित्र इसके द्वारा इतिहास भूगोल एवं विज्ञान पढ़ाने में रेखाचित्र एवं मानचित्र बहुत उपयोगी होते हैं ।
- प्रायोगिक प्रदर्शन विज्ञान, प्राकृतिक अध्ययन और भूगोल में प्रयोग प्रदर्शन विषय की मष्ट पर्व प्रभावशाली बनाने में बहुत सहयोग मिलता है ।

शाब्दिक माध्यम :

इस प्रकार के दृष्टांतों में शब्द के माध्यम का उपयोग किया जाता है । जैसे छोटी कहानी, दृश्य का वर्णन, तुलनात्मक दृष्टांत आदि का समावेश होता है ।

सामान्य रूप से अशाब्दिक माध्यमों का उपयोग करते समय जरूरत पड़ने पर अशाब्दिक माध्यमों का ही उपयोग करें जहाँ शाब्दिक दृष्टांतों द्वारा विचारों, ख्याली या अमूर्त विचारों को समझा सकते हैं, वहाँ अशाब्दिक माध्यमों की टालना चाहिए ।

(ii) दृष्टांत पेश करने की पद्धति : दृष्टांत को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक आगमन एवं निगमन पद्धति का संयुक्त रूप से उपयोग करना चाहिए । शिक्षक को सिद्धांत, नियम या स्पष्टीकरण की शुरूआत करने से पहले, आगमन-निगमन का उपयोग करना चाहिए । इस प्रकार करने से 'ज्ञात से अज्ञात'. 'सरल से कठीन' एवं 'मूर्त से अमूर्त' की ओर जाने का ख्याल सरल बनता है ।

दृष्टांत कौशल की प्रक्रिया

- सिद्धांत, नियम या ख्याल स्पष्ट करने की प्रक्रिया
- सिद्धांत, नियम या ख्याल को समझे है या नहीं इसकी जांच प्रक्रिया

दृष्टांत कौशल के मुख्य घटक :

योग्य एवं सरल दृष्टांत की रचना करना

रूचिपूर्ण दृष्टांत देना ।

सिद्धांत, नियम या ख्याल के साथ जुडे हुए दृष्टांत की रचना करना ।

दृष्टांत की पेशकश करने के लिए योग्य माध्यम का उपयोग ।

आगमन-निगमन पद्धति द्वारा पेशकश करना ।

दृष्टांत कौशल में ध्यान रखने योग्य बातें :

दृष्टांत छात्रों के पूर्वज्ञान आधारित होने चाहिए ।

दृष्टांत सरल होने चाहिए ।

दृष्टांत छात्रों की वय कक्षा अनुसार होने चाहिए ।

पाठ्यवस्तु को ध्यान में रखकर दृष्टांत देने चाहिए ।

संकल्पना, विचार या सिद्धांत के अनुसार दृष्टांत देने चाहिए।

दृष्टांत अधिक लंबे नहीं होने चाहिए। संक्षिप्त एवं सटिक

अनावश्यक माध्यमों का ढेर न करें। जरूरी माध्यमों का ही उपयोग करे ।

अनावश्यक अशाब्दिक माध्यमों का उपयोग टालना चाहिए ।

दृष्टांत की पेशकश तर्कबद्ध, क्रमिक एवं विषय के अनुरूप होनी चाहिए ।

आगमन पद्धति का उपयोग करके दृष्टांत पेश करने चाहिए।

इकाई को मद्देनजर रखकर सटिक उदाहरण देने चाहिए।

छात्रों के अध्ययन में अड़चन पैदा करे ऐसे दृष्टांत पेश न करे

1.3 सेतुपाठ

प्रस्तावना :

सूक्ष्म शिक्षा प्रयुक्ति के द्वारा कौशल पारंगतता के लिए प्रशिक्षणार्थी के एक कौशल प्राप्त करते हुए सभी कौशल अच्छी तरह हस्तगत करने होते हैं। इस प्रकार सभी कौशल में पारंगतता प्राप्त करके वह स्कूल की कक्षाओं में जाकर असरदार शिक्षा कार्य करता है। विभिन्न कौशलों की असरकारकता के संयोग से कक्षाध्यापन में पारंगतता प्राप्त करता है। 35 या 40 मिनट के कालांश में (In Time) वह

अपना असरकारक अध्यापन कर सकता है। सूक्ष्म शिक्षण का आशय यह है कि एक के बाद एक कौशल सीखकर अन्य कौशलों को जोड़कर प्रशिक्षणार्थी का अध्यापन कला में पारंगत बनाना है ।

सूक्ष्म शिक्षा पाठ द्वारा प्रशिक्षणार्थी एक के बाद एक कौशल के पाठ है । कक्षाध्यापन के समय वह 35 से 48 मिनट तक किसी एक विषय का असरकारक शिक्षाकार्य करते समय विविध कौशलों का कुशलतापूर्वक समावेश कर शिक्षा कार्य करता है तभी कक्षाध्यापन प्रभावशाली बनता है ।

- प्रशिक्षणार्थी को पाठ्यवस्तु के हेतुओं की समझदारी होनी चाहिए।
- प्रशिक्षणार्थी द्वारा हस्तगत किए गए कौशलों की एवं घटकों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए ।
- इकाई के जिन हेतुओं को सिद्ध करना चाहता है उसी के अनुसार कौशल की पसंदगी करनी चाहिए ।
- कौशल के साथ पाठ्यवस्तु का अच्छी तरह समन्वय करके आयोजन करना चाहिए ।

प्रशिक्षणार्थी द्वारा पसंद किए गए पाठ्यवस्तु के हेतुओं की सिद्धि के लिए कौशल के उपयोग एवं घटकों की संपूर्ण जानकारी तथा पाठ्यवस्तु के संदर्भ में अपने वर्तन व्यवहार को तय करके कक्षा में शिक्षा कार्य करता है ।

विभिन्न कौशलों का समायोजन :

सूक्ष्म शिक्षा के द्वारा हस्तगत विविध कौशलों का समायोजन करके कक्षा में मेकोटीचिंग (Macroteaching) किया जा सकता है । सूक्ष्म शिक्षा और मेकोटीचिंग के पहले मिनीटीचिंग का प्रशिक्षण प्रशिक्षणार्थी को देना आवश्यक है।

मिनीटीचिंग की संकल्पना अल्स्टर कॉलेज (Ulster College) सन् 1976 में प्रस्तुत की गई थी। सूक्ष्म शिक्षा के छोटेपन को दूर करके संक्षिप्त अध्यापन या सेतु पाठ का ख्याल पेश किया गया था । सूक्ष्म शिक्षा द्वारा हस्तगत किए हुए अलग-अलग कौशल द्वारा कक्षाध्यापन कार्य करने में मुसीबत होती है। इसलिए इन सभी कौशलो का समायोजन करके कक्षाध्यापन कैसे किया जाय वह कला प्रशिक्षणार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है ।

सेतुपाठ और सूक्ष्म पाठ के बीच का अंतर :

- सूक्ष्म शिक्षा में शिक्षा के बाद पुनः शिक्षण (Reteach) किया जाता है । मिनीटीचिंग या में पुनः शिक्षण को दूर किया गया है ।
- सूक्ष्म शिक्षा में समय कम होता है जबकि सेतुपाठ में समय ज्यादा होता है ।
- सूक्ष्म शिक्षा के कौशल अनुसार कक्षाध्यापन कार्य करने पर कठिनाई महसूस होती है। जबकि सेतु पाठ में यह कठिनाई महसूस नहीं होती ।
- सूक्ष्म शिक्षा में छात्रों की संख्या कम होती है, जबकि सेतुपाठ में छात्रों की संख्या सूक्ष्म शिक्षण के छात्रों से ज्यादा होती है ।
- सुधारात्मक कार्यक्रम के रूप में सूक्ष्म शिक्षा को स्वीकार किया जाता है । इस प्रयुक्ति के दौरान शिक्षक की शिक्षा संबंधित कमजोरियों को दूर करना जरूरी होता है । सूक्ष्म शिक्षा के साथ सेतु पाठ आयोजन किया जाता है ।

सेतुपाठ का महत्त्व :

- सेतुपाठ सूक्ष्म शिक्षा और मेकोटीचिंग पाठ के बीच का सेतु है।
- सूक्ष्म शिक्षा की कुछ सीमाएँ है जैसे- समयमर्यादा छात्रों की संख्या आदि को सेतुपाठ द्वारा दूर किया जा सकता है।
- सेतुपाठ के दौरान प्रशिक्षणार्थी एक से अधिक कौशल द्वारा शिक्षा कार्य करता है। इसलिए अच्छी तरह कक्षाध्यापन करता है।
- कक्षाध्यापन का वास्तविक अनुभव सेतु पाठ द्वारा प्राप्त कर सकता है।
- प्रशिक्षणार्थी का आत्मविश्वास बढ़ता है।
- अध्यापन कार्य और व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है।

इकाई-2 हिंदी भाषा शिक्षा के उद्देश्य एवं कौशल्य

2.1 सामान्य उद्देश्य

2.2 विशिष्ट उद्देश्य

2.3 हिंदी भाषा में अनुदेशात्मक उद्देश्य

प्रस्तावना :

अपने प्रत्येक कार्य के पीछे मनुष्य कोई न कोई उद्देश्य होता ही है, आदमी उद्देश्यहीन होकर कोई कार्य नहीं करता। कार्य का उद्देश्य जितना स्पष्ट और सरल होता है, कार्य के परिणाम उतने ही सकारात्मक होने की सम्भावना बढ़ जाती है शिक्षा एक ऐसी प्रवृत्ति है जो मानवसमाज के लिए बहुत उपयोगी है। अतएव वह उद्देश्य हीन हो ही नहीं सकती। जब कोई शिक्षक शिक्षणकार्य करता है तो वह अपने शिक्षणकार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए अपने कार्य में उद्देश्यों को सही प्रकार से निर्धारित करता है। उद्देश्य निर्धारण का अर्थ होता

है शिक्षक अपने छात्रों को क्या सिखाना चाहता है तथा उनके व्यवहार में क्या परिवर्तन लाना चाहता है। उसका निर्णय निर्धारित उद्देश्य के आधार पर वह निम्नांकित क्रियाओं को सफलतापूर्वक कर सकता है।

(1) शिक्षण विधि का चयन करना

(2) शिक्षण प्रयुक्ति का चयन करना

(3) शिक्षण सामग्री की व्यवस्था करना

उद्देश्यों के प्रकार :

सामान्यतः उद्देश्यों के दो प्रकार होते हैं। वे इस प्रकार हैं :

(1) सामान्य उद्देश्य

(2) विशिष्ट उद्देश्य

अब हम दोनों के विषय में विशेष जानकारी प्राप्त करेंगे।

हिन्दी के सामान्य उद्देश्य :

शिक्षण के उद्देश्यों का सम्बन्ध विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन से होता है शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार के तीन पक्षों में परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया जाता है।

(1) ज्ञानात्मक पक्ष (2) भावात्मक पक्ष (3) क्रियात्मक पक्ष

जब छात्रों के व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करना होता है। तो उसके लिए यह जरूरी होता है कि पहले से ही इस प्रकार के कार्य उद्देश्यों को स्पष्ट तौर निर्धारित करके लिख लिया जाये।

अमेरिकन शिक्षणविद् बी. एस. ब्लूम ने सन् 1956 ई. में विद्यार्थियों के व्यवहार के ज्ञानात्मक पक्ष का वर्गीकरण किया। यह वर्गीकरण इस प्रकार है :

(1) ज्ञान (Knowledge)

(2) बोध (Unerstanding)

(3) प्रयोग (Application)

(4) विश्लेषण (Analysis)

(5) संश्लेषण (Synthesis)

(6) मूल्यांकन (Evaluation)

अब सभी वर्गों का विश्लेषण किया जा रहा है।

O ज्ञान (ज्ञानप्राप्ति) :

ज्ञान क्षेत्र के उद्देश्य के अन्तर्गत विद्यार्थी अध्ययन से संबंधित निम्न चीजों की जानकारी लेता है।

(1) अध्ययन के शब्द (2) पद (3) लक्ष्य (4) नियम

(5) परिभाषाएँ (6) कारक (7) सूचना आदि।

ज्ञान हेतु अध्ययन करने से विद्यार्थी की उपलब्धि क्या क्या होगी ? तो इसका जवाब है वह परिभाषा दे सकेगा, पुनःस्मरण कर सकेगा, पहचान सकेगा, पसंद कर सकेगा, मापन कर सकेगा, सूची बना सकेगा, आदि।

विशिष्ट उद्देश्य की संरचना :

(1) विद्यार्थी लड़के के स्वभाव के लक्षण गिना सकेंगे। (अपनी कमाई)

(2) विद्यार्थी विविध शब्द का पर्याय दे सकेंगे।

(3) विद्यार्थी आकारान्त सन्धि का नियम कह सकेंगे।

बोध (अर्थग्रहण) :

बोध क्षेत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी निम्नांकित मानसिक क्रियाएँ कर सकता है।

(1) विभेदीकरण कर सकता है। (2) सामान्यीकरण कर सकता है।

(3) निर्णय कर सकता है। (4) अशुद्धियाँ दूर कर सकता है।

(5) अन्तर करना सीख सकता है।

बोध क्षेत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी अनुवाद कर सकता है, व्याख्या कर सकता है, उल्लेख कर सकता है तथा बाह्य गणना कर सकता है।

'इस क्षेत्र के उद्देश्यों की संरचना के लिए निम्नलिखित क्रियाओं का प्रयोग करना होता है ये व्यवहार परिवर्तन स्पष्ट करती है।

(1) व्याख्या करना (2) उदाहरण देना (3) वर्गीकरण करना

(4) विभेदीकरण करना (5) प्रस्तुत करना (6) प्रतिपादन करना

(7) सामान्यीकरण करना (8) सारांश देना (9) तुलना करना

विशिष्ट उद्देश्य निर्धारण :

(1) विद्यार्थी वैर को अवैर से जीतनेवाले का उदाहरण देंगे। (आराधना)

(2) सम्राट के न्यायमंत्री को भूरि-भूरि प्रशंसा करने का आशय स्पष्ट करेगा। (न्यायमंत्री)

(3) विद्यार्थी भारत को भूलोक का गौरव प्रतिपादित करेगा। (भारत गरिमा)

(4) 'ज्ञान तथा माधुर्य सभ्यता के लक्षण हैं' विधान की - व्याख्या कर सकेंगे। (मेरे नौजवान दोस्तों)

O प्रयोग (उपयोजन)

प्रयोग का अर्थ है प्राप्त ज्ञान का नई परिस्थितियों में उपयोजन करना। किन्तु यह तब की सम्भव है कि जब विद्यार्थी की उस विषय की समझ हो। प्रयोग क्षेत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी नियमों और सिद्धान्तों का करता है, निदान करता है, पाठ्यवस्तु का व्यावहारिक रूप से प्रयोग करता है।

विशिष्ट उद्देश्यों की संरचना के लिए निम्नांकित व्यवहारगत क्रियाएँ प्रयोग में ली जा सकती हैं :

(1) पूर्वकथन (Predict) (2) गणना करना (Compute) (3) प्रयोग करना (Use)

(4) प्रदर्शन करना (Demonstrate) (5) जाँच करना (Assess) (6) परिवर्तन करना (Change)

(7) तैयार करना (Prepare)

विशिष्ट उद्देश्य (कुछ उदाहरण) :

(1) विद्यार्थी दिये गये मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।

(2) कवि द्वारा सारे संसार को अपना घर कहने के दो-तीनकारण दे सकेंगे। (कोई नहीं पराया)

(3) रूपरेखा पर से कहानी तैयार करेगा।

(4) निराश न होने के लिए लेखक द्वारा दिये गये तर्कों की जाँच करेगा (क्या निराश हुआ जाए)

विश्लेषण :

इसके अन्तर्गत विद्यार्थी तत्त्वों का, सम्बन्धों का, व्यवस्थित सिद्धान्तों का विश्लेषण करना सीखता है ।

जिसने विश्लेषण का हेतु सिद्ध किया है वह निम्नांकित व्यवहार कर सकेगा ।

(1) विश्लेषण करना (2) विभाजन करना (3) भेद करना

(4) तुलना करना (5) आलोचना करना (6) समर्थन करना

विशिष्ट उद्देश्य :

(1) निम्नलिखित विशेषणों को प्रकारगत विभाजित कर सकेगा।

(2) लेखक और श्याम के स्वभाव का भेद स्पष्ट कर सकेगा। (मेरी बीमारी श्यामा ने ली)

(3) धरती स्वर्ग बनेगी कवि की भावना के समर्थन में अपना तर्क देगा । (धरती स्वर्ग बने)

मूल्यांकन :

मूल्यांकन को मनुष्य के ज्ञान का सब से ऊँचा स्तर का उद्देश्य माना जाता है। इसमें घटनाओं, सिद्धान्तों तथ्यों का आन्तरिक और साक्ष्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है।

मूल्यांकन स्तर का उद्देश्य सिद्ध करने का अर्थ होता है आन्तरिक साक्षियों के द्वारा निर्णय

इस क्षेत्र के विशिष्ट उद्देश्य की संरचना के लिए निम्नांकित क्रियाओंका प्रयोग किया जा सकता है ।

(1) मूल्यांकन करना (2) परिणाम निकालना (3) बचाव करना

विशिष्ट उद्देश्य :

(1) थानेदार को मसीहा कहने के कारण दे सकेंगे। (एक यात्रा यह भी)

(2) 'मेरी बीमारी श्यामा ने ली' लेखक के इस मन्तव्य का मूल्यांकन कर सकेगा ।

(3) पिता के प्रयत्नों से बेटे के व्यवहार में आये परिवर्तनों को स्पष्ट कर सकेगा। (अपनी कमाई)

(4) पुत्र के प्रति पिता के रुक्ष-शुष्क व्यवहार के बचाव के अपने तर्क दे सकेंगे ।

2.4 गुजरात राज्य में कक्षा 6 से 10 तक के पाठ्यक्रम

गुजरात राज्य में कक्षा 6 से 10 तक के पाठ्यक्रम में हिन्दी शिक्षा के उद्देश्य : गुजरात राज्य शिक्षा मंत्रालय ने गुजरात राज्य में कक्षा 6 से 10 तक के पाठ्यक्रम में हिन्दी शिक्षा के सामान्य उद्देश्य निर्धारित किये हैं। ये उद्देश्य इस प्रकार हैं

(1) संतुलित प्रतिभा विकास

(2) राष्ट्रीय एकता व चरित्र निर्माण

(3) सांस्कृतिक विरासत परिचय एवं संवर्धन

(4) लोकतंत्र प्रशासन में हिन्दी का परिचय अब हम प्रत्येक उद्देश्य का विस्तार से परिचय करेंगे।

(1) संतुलित प्रतिभा का विकास :

भूमिका : पाठ्यपुस्तक साधन है। साध्य है विषयमें प्रावीण्य प्राप्त करना। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी सिखाने का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का कौशल्य प्राप्त करना है। किंतु पाठ्यपुस्तक का अध्यापन करवाने के और विशाल उद्देश्य भी हैं जिसके द्वारा छात्र एक अच्छा मानव बने। अपने राष्ट्र के प्रति स्वार्पण भाव रखे। पाठ्यपुस्तक के द्वारा कुटुंब, समाज और संस्कृति को भलीभांति पहचान सके। अच्छे संस्कार प्राप्त करके एक अच्छा नागरिक बने। अतः यहाँ पर प्रश्नोत्तर रुप में जो चर्चा होगी उसमें हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक के द्वारा विशाल फलक पर छात्र को अपने भविष्य के जीवन के लिए उपयोगी पाथेय कैसे संपादन करे उसकी चर्चा होगी।

स्कूलों में छात्रों को ज्ञान देने में पाठ्यपुस्तकों का योगदान बड़ा रहा है। बिना पाठ्यपुस्तक शिक्षा विषयों के उद्देशों को सिद्ध करना नामुमकीन है। हम जानते हैं कि बालक शक्तिपुंज होते हैं। उनमें अनेक प्रकार की बुद्धिशक्ति सुषुप्त रुप से निहित होती है इन शक्तियों को बाहर लाकर निखारने का धर्म शिक्षक का होता है। हम यह भी समझते हैं कि प्रत्येक बालक समान नहीं होता। उनमें व्यक्तिगत पृथक्ता (Individual differences) होती है शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, बौद्धिक स्तर उनमें अलग से होते। शिक्षक अनेक प्रकार की पद्धति, प्रयुक्ति और प्रविधिओं का उपयोग करके उनकी प्रतिभा को निखारने का प्रयत्न करता रहता है

पाठ्यपुस्तक के रचयिता विद्यार्थियों की प्रतिभा के विकास के उद्देश्य को भी नज़र समक्ष रखकर पाठों का चयन करते रहते हैं। कक्षा-8 की पुस्तक की शरुआत में ही बताया गया हैं कि पाठ्यपुस्तक को तीन क्षेत्रों में रखकर (पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है। (1) जीवन के विविध संदर्भ (2) केंद्रिय घटक (3) जीवन मूल्यपरक घटक। पाठ्य सामग्री पसंद करते समय विद्यार्थियों की रुचि, उनकी बौद्धिक क्षमता तथा भाषिक योग्यता के विकास को ध्यान में रखा गया है। पाठ्यक्रम के आधार पर पाठ्यपुस्तक का निर्माण होता है। अब पाठ्यपुस्तकों पर दृष्टिपात करें। क्या सचमुच छात्रों की संतुलित प्रतिभा को निखारने का उनमें अवसर दिया गया है ? प्रतिभा ईश्वरदत्त वैसे तो मानी जाती है। संतुलित प्रतिभा अर्थात् नैसर्गिक असाधारण बुद्धिशक्ति का संतुलित (Balanced) विकास करना। उसका अर्थ यह हुआ कि पाठ्यपुस्तक में ऐसे पाठ काव्य हों जिनका विवरण छात्रों को सम्यक दृष्टि प्रदान करे। उनके व्यक्तित्व (Personality) को इस प्रकार आकार दें ताकि वे सही क्या गलत क्या अच्छा क्या बुरा क्या; सुंदर क्या कुरुप क्या उनका तटस्थ भाव से दर्शन कर सकें। कक्षा-8 में दिनकरजी का 'चाँद और कवि' में मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं है - यह बात। क्या निराश हुआ जाए ? मनुष्य प्रतिभा को आशावादी बनाए। कक्षा-9 का पाठ 'ध्यानचंद होकी के जादूगर'- खेलों में रुचि उत्पन्न करना और देशप्रेम तथा खेल प्रतिभा को प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा आत्मविश्वास

प्रदान करता है। 'जंग', 'रक्त और हमारा शरीर', 'महान भारतीय वैज्ञानिक विक्रम साराभाई' आदि पाठों के द्वारा छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त करने में सहायक होते है। 'बापू के संस्मरण' पाठ के द्वारा एक अमर प्रतिभा को नज़दीक से समझने का सौभाग्य प्राप्त होता है ।

इस तरह पाठ्यपुस्तक छात्रों को प्रतिभा संपन्न बनाती है। शिक्षक का फर्ज़ यह होगा कि कहीं अपने विचार विद्यार्थियों पर थोपने का प्रयत्न नहीं करे । एक तटस्थ दिग्दर्शक के रुप में पाठों के अंतर्गत सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का सही दर्शन कराके छात्र की प्रतिभा का संतुलित विकास करें ।

(2) राष्ट्रीय एकता एवं चारित्र्य निर्माण :

पाठ्यपुस्तक रचना इसलिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है कि उसके उपर छात्रों के भावि जीवन की नींव डाली जाती है। पाठ्यपुस्तक के तीन क्षेत्रों को इन लोगों ने जो पसंद किया उसमें जीवन के विविध संदर्भ के क्षेत्र में राष्ट्रीय भावात्मक एकता, सर्वधर्म समभाव तथा मानवाधिकार जैसे मुद्दों को ध्यान में रखा है तथा जीवन मूल्यपरक विषयों में सच्चाई, शिष्टाचार उदारता, सेवाभावना, साहस, प्रेम, करुणा, निष्ठा, धर्मनिरपेक्षता आदि चरित्र निर्माण प्रेरक विषयों का उल्लेख किया । पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करने पर राष्ट्रीय एकता और चारित्र्य निर्माण की विषय सामग्री पर्याप्त मात्रा में मिलती है। राष्ट्रीय एकता की अपेक्षा चारित्र्य निर्माण के अनेक पाठ विपुल मात्रा में प्राप्त है ।

का छात्रों के दिलों दिमाग में राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीय एकता की भावना पनपे उसका भरपूर प्रयत्न होने जरुरी है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो लोगों को एकसूत्र में बाँधने की क्षमता रखती है । पाठ चयन में यह प्रयत्न ठीकठीक हुआ है। कक्षा-8 में देखे तो मैथिलीशरणजी का 'विश्वराज्य' काव्य राष्ट्रीयता से उपर उठकर विश्व राज्य की कल्पना करता है । 'अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल'- 'राष्ट्र का स्वरुप' में राष्ट्र का मूल्य पहचानकर उसे बताया गया है। अगर तटस्थापूर्वक कहें तो 'राष्ट्रीय एकता' के लिए विषय सामग्री कम रही है ।

(3) सांस्कृतिक विकास :

किसी देश की सभ्यता का विकास यानि संस्कृति का विकास उसकी शिक्षा प्रणालि से होता है। भारत देश की पुरानी संस्कृति का इतना उज्जवल इतिहास है कि पश्चिमी देश हमेशा हमारी संस्कृति के प्रति आकर्षित रहे हैं। आधुनिक भारत ने जो कुछ भी विकास किया है उसमें हमारी संस्कृति का ही उपकार मानना चाहिए। इस संस्कृति में कोई भी शास्त्र की चर्चा गृहाराई से की गई मालूम पड़ती है । नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय में विश्वभर के छात्र अध्ययन करने आते थे । हमारे वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता आदि मानव संस्कृति के मूल्यवान ग्रंथ हैं ।

वैश्विक वातावरण बदलने पर, अति आधुनिक तकनिकी के कारण, टेलिविज़न के प्रसार के कारण हमारी सभ्यता में भी परिवर्तन आ गया है । बोलचाल, रहनसहन, विचारों में बदलाव आ गया है। पश्चिमी अंधानुकरण के कारण उसका असर हमारी भारतीय संस्कृति पर छा गया है। जिन आविष्कारों पर हम प्रभावित हो गये हैं वे हमारे पुराने भारत में कब के हो गये थे ।

हमारी संस्कृति का गौरव प्रत्येक देशवासी को होना चाहिए। माध्यमिक स्कूलों में छात्र गौरवशाली संस्कृति दर्शन कर सकें, सोचे और अपने जीवन में वह उतारे यह समय की मांग है । कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि आधुनिक सभ्यता का हम त्याग करें । संस्कृति राष्ट्र के गौरव की गाथा है। उसे पहचानना और संवर्धन करना नयी पीढ़ी के उपर अवलंबित है। स्कूली शिक्षा दरमियान पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक विरासत का समावेश करना नितांत जरुरी है ।

आनंद इस बात का है कि गुजरात पाठ्यपुस्तक मण्डल ने पाठ्यक्रम के आधार पर पाठ्यपुस्तक में सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में कई पाठ ऐसे रखे हैं जिनकी सघन चर्चा शिक्षक के द्वारा हो तो छात्रों को संस्कृति के प्रति अवश्य प्रेम जागृत होगा ।

हिन्दी के पुराने महान कवियों की उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ्यपुस्तक में कक्षा-8 से 10 तक समावेश किया गया है; जिन में सूरदास, तुलसीदास, कबीर, मौरां, बिहारी और रहीम के दोहे पद मिलते हैं। छात्र इन से प्राचीन कवियों का परिचय मात्र नहीं, अपितु उनकी महान रचनाओं से परिचय प्राप्त कर सकते हैं। ये सब रचनाऐं पुरानी ब्रज, अवधि में रची गयी है अतः इन भाषाओं से भी अवगत हो सकते है। कक्षा-8 में हिमाद्रि तुंग शृंग से हिमालय की पहचान हो सकती - है। 'शबरी' काव्य रामायण की याद दिलाता है। 'अजंता की गुफाओं का वर्णन पुरानी भारतीय शिल्पकला का बेनमून नमूने का परिचय कराता है। 'पुष्पवाटिका' में राम के जीवन संबंधी सुंदर वर्णन तुलसीदास जी द्वारा प्रस्तुत हुआ है। सिंहगढ विजय शिवाजी महाराज की याद दिलाता है। कक्षा 9 में मधुपर्व में यशपालजी बौद्धकालीन समाज से अवगत हैं । 'महाभारत की एक साँझ' हमारी सांस्कृतिक विरासत का परिचय कराती है।

- शिक्षकों के उपर बड़ी जिम्मेवारी है। वे इन काव्यों एवं पाठों का रसपान और अर्थघटन किस तरीके से करते हैं इनके उपर छात्रों की समझ का आधार है। अनेक संदर्भ पुस्तकों का उपयोग करने पर छात्र रसपूर्वक हमारी संस्कृति को पहचान पायेंगे ।

(4) लोकतंत्र प्रशासनतंत्र में हिन्दी :

भारत सार्वभोम, बिनसांप्रदायिक प्रजासत्ताक राष्ट्र है । भारत अनेक भाषा-भाषी लोगों का देश है। भारत में अनेक जातियाँ और उपजातियाँ निवास कर रही हैं। भारत भौगोलिक दृष्टि से विशाल राष्ट्र है । अंग्रेजों की चुंगाल से इस राष्ट्र को 1947 की 15 अगस्त को आजाद करवाया। वैविध्यपूर्ण प्रादेशिक विशेषतायुक्त देश में प्रशासन किस प्रणाली से चलाया जाय, यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न था । हमारी संविधानसभा लोकतंत्रीय प्रशासन को 26 जनवरी 1950 अमल में लाया गया।

लोकतंत्र में प्रजा की आवाज प्रमुख होती है। प्रजा के प्रतिनिधि संसद में बैठकर नीतिविषयक निर्णय लेते हैं। भारतीय भावावरण में लोकतंत्रीय शासन ही लोककल्याण के लिए श्रेष्ठ है यह बात विश्व के देशों ने भी स्वीकृत की है। सच्चा लोकतंत्रीय शासन क्या होता है उसकी ख़बर छात्रों को अपने अध्ययनकाल में समझ में आ जाय तो भविष्य में देश की बागदोर पूरे विश्वास और श्रद्धा से संभाल सके। हमारे संविधान ने नागरिकों के अधिकार और फर्ज का भी विवरण दिया है। छात्र उसे आत्मसात् कर लें तो भविष्य की पीढ़ी को राष्ट्रशासन चलाने में अधिक सुविधा मिल जाती है ।

इतना विवरण करने के बाद लोकतंत्रीय प्रशासन में हिन्दी का परिचय यहाँ तक उचित है यह सोचना है। किसी भी देश की पहचान एक ध्वज, एक राष्ट्रीय प्राणी, एक राष्ट्रीय पंछी हो सकते हैं तो राष्ट्र की पहचान के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना नितांत आवश्यक है । हमारे राष्ट्रीय नेता महात्मा गांधीजी, विनोबा भावे, लोकमान्य तिलक आदि ने भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही दृढ़तापूर्वक मानी इतना ही नहीं, हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी किया। संविधान के खण्ड में से हिन्दी को विशेष रूप से चर्चा की गई है। उसके अनुसार हिन्दी भारत राष्ट्र की राजभाषा होगी और राजकारोबार हिन्दी में ही चलेगा। नागरीलिपि हिन्दी में उपयोग में ली जायेगी । यहाँ और बातें अप्रस्तुत होगी । प्रसिद्ध व्याख्या लोगों की, लोगों द्वारा लोगों के लिए चलता प्रणाली को लोकतंत्रीय शासन कहते हैं । अतः यह स्पष्ट है कि बहुजन जो भाषा बोलें वह राष्ट्रभाषा है इस अर्थ में हिन्दी राष्ट्रभाषा है इसलिए भारत के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र भाषा की पहचान लोकतंत्र में करनी ही होगी । श्रेष्ठ उपाय है पाठ्यक्रम में एक विशाल उद्देश्य के रुप में लोकतंत्रीय शासन में हिन्दी की पहचान के लिए व्यवस्था होनी चाहिए ।

गुजरात राज्य के कक्षा-8 से 10 तक की पाठ्यपुस्तकों में इस बारे में ज्यादा उल्लेख नहीं है। कक्षा-9 में 'राष्ट्र का स्वरुप' चिन्तनात्मक निबंध कुछ संकेत करता है । अपेक्षा है कि लोकतंत्रीय प्रणाली तथा उस में राष्ट्रभाषा हिन्दी की पहचान हो सके ऐसे पाठों को पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया जाय ।

इकाई 3 अध्यापन पद्धतियां एवं प्रयुक्तियों

3.1 प्रत्यक्ष, परोक्ष, आगमन निगमन, निरीक्षित स्वाध्याय, प्रकल्प

3.2 प्रश्नोंतर, गान, नतयिकरण एवं संदर्भकथन

प्रत्यक्ष विधि

प्रत्यक्ष विधि को प्राकृतिक या नैसगिक विधि भी कहते है क्योकि इस विधि के द्वारा बालक या विद्यार्थी जिस रीति से अपनी मातृभाषा सीखता है उसी तरह उसको दूसरी या नई भाषा स्वाभाविकता के साथ सीखना है। इस विधि को वार्तालाप विधि भी कहा जाता है।

लाक्षणिकता

-बोलचाल या वार्तालाप की प्रधानता होती है।

-वार्तालाप के बाद वाचन तथा लेखन से आरंभ

-इस विधि में मातृभाषा का उपयोग पूर्वातः वर्ज्य है।

-भाषा-शिक्षा का प्रारंभ वाकयो से होता है।

-व्यवहारिक व्याकरण की ही शिक्षा ही दी जाती है।

-आगमन विधि से व्याकरण सीखाया जाता है ।

-इस विध से नई भाषा का अपेक्षित और समुचित वातावरण किया जाता है

प्रत्यक्ष विधि की विशेषता:

यह विधि सर्वथा स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक है ।

-इसमे पहले श्रवण और बातचीत पर जोर दिया जाता है।

-इसमे वाचन और लेखन पर जोर दिया जाता है।

-मौखिक अभिव्यकित का कौशल्य बढता है ।

- द्वितीय भाषा का वातावरण मिलता है ।

-भाषा शुद्धि बनी रहती है।

-व्याकरण के नियम नहीं रटने पडते ।

- उच्चारण स्पष्ट होता है

- वाक्य -गठनो का ख्याल आने लगता है

मर्यादा

-वार्तालाप पर जोर देने से वाचन लेखन में पिछड़ जाते है।

- विद्यार्थी भाषा पर प्रभुत्व नहीं पा सकते ।

- प्रत्येक शब्द को सीखना मुश्किल है।

- मातृभाषा का उपयोग नही होता ।

-प्रतिभा सम्पन्न छात्र है उसे ही भावान्तित होते है ?

प्रत्येक भाषा शिक्षक हस विधि से नहीं सीखा सकता

भाषा शिक्षकीका वातावरण उत्पन्न करने का सामर्थ्य सभी शिक्षको मे नही होता होता।

* परोक्ष विधि

संकल्पना

अन्य भाषा शिक्षण की प्राचीनतम प्रणाली व्याकरण अनुवाद प्रणाली है। उसे परोक्ष विधि भी कहते है क्योकि उसमें भाषा का परिचय छात्रो को सीधे रूप में नही वरना परोक्ष रिति से दिया जाता है।

परोक्ष विधि का स्वरूप:

(१) व्याकरण अनुवाद पर बल- छात्रो को प्रारंभ से मातृभाषा के माध्यम से शब्दावली और वाकय - घटको का परिचय दिया जाता है। व्यवहारिक वाकय, वाकयों का परिवर्तन शब्दो भेद आदि की जानकारी देने में व्याकरण के नियम प्रस्तुत किये जाते है और रटवाये जाते है ।

(२) अनुवाद की शिक्षा - प्रत्येक पद पर मातृभाषा का यर्थाथ उपयोग किया जाता है। नवीन शब्द, वाकय या भाषाकीय कार्यों बताने के लिए भी अनुवाद ही प्रस्तुत किया जाता है।

(३) तुलना - नवीन अर्थात अन्य भाषा की तुलना मातृभाषा के साथ ही की जाती है । यह तक तुलना होती है कि कविता के अर्थ पंकित्यो का अन्वय आदि भी तुलना के सराहे स्पष्ट करवाया जाता है 1

(४) वाचन तथा लेखन अवसर पैदा होने पर अन्य भाषा में छात्र के विशेष वाचन पर बल दिया जाता है, अन्यथा नही लेखन इत्यादि में अनुवाद का प्रयोग करवाया जाता है।

परोक्ष विधि की विशेषतायें

-शिक्षक और विद्यार्थी दोनो के लिए सरल है क्योंकि इसमे किसी प्रकार के निश्चित बन्धन या क्रम नही। जो विद्यार्थी जितनी शीघ्रता करता है उतने लाभ उठा सकता है। नये शब्दो को आसानी से पकड़ लेने में शब्द भंडार में वृध्धि कर लेने मे वाचन के सराहे आगे बढने में यह विधि होशियार छात्रो की सहायक बन जाती है, कयोकि मातृभाषा के सहारे के बिना शिक्षक की सहायता से आगे बढ जाते है । यह

- इस विधि में व्याकरण के नियम रटवाये जाते है। इस लिए किसी प्रकार की स्पष्टता नही रहती । वे स्वयं ही अपने भूलो का संशोधन कर लेते है । मातृभाषा की कमिया भी इसके कारण पूरी हो जाती है। भी

- मातृभाषा के आधार पर इस विधि का स्वरुप बनता है इसलिए उन ज्ञान का यथा समय सहारा मिलता है और उपयोग होता है। विनिमय के कारण दोनो भाषाओं के तथ्यो का द्रढीकरण होता है । विद्यार्थी को लेखन वाचन को शकित बढती है ।

-अनुवाद के कारण दोनो भाषाओ पर छात्र का अधिकार बन जाता है। स्वतंत्र रूप से सर्जन करने का रचना कौशल्य उसमें बढता है। कम समय में छात्र अपनी शकित के अनुसार लाभान्वित होता है ।

-व्याकरण कि जो आधुनिक भाषा शिक्षण में सर्वथा उपेक्षणीय है उस पर छात्र अधिकार पा लेता है। इसलिए भविष्य में भाषाकीय ढाँचो मे वह पूर्ण एवं स्पष्ट रहता है । भाषा के व्याकरणीय पक्ष को जानकारी का इतना अधिक फायदा अन्य किसी भी विधि में नहीं है।

परोक्ष विधि की मर्यादा:

-भाषा शिक्षा मे कुछ हद तक कंठस्थीकरण है । वह कविताओ पंकितर्या संवाद या मनोहर शब्द चित्र इत्यादि के लिए है । व्याकरण के शुष्क नियमो को रटाकर इस में बच्चो की जिज्ञासा वृति और सीखने के आनंद की कुन्ठित कर दिया जाता है। बच्चो की मौलिक शकित पर इसमें जबरदस्ती होती है। नियमो का पद-पद पर उपयोग होता है।

-भाषा की मूलतः प्रवृति मौखिक है । इस विधि में अनुवाद और अर्थग्राह्य को प्रधानता मिलती है । अभिव्यक्ति के नाम पर कुछ मात्रा मे लिखित अभिव्यकित रह जाती है मौखिक नहीं।

-इस विधि से भाषा सीखने वाले बच्चो में प्रारंभ मे कुछ विकास दिखता है। प्राथमिक ढांचों की जह तक व्याकरण के नियम सहायता करते है वह तक वह आसानी से सीख लेता है । लेकिन जब अनुवाद को छोड़कर मौलिक रचनाओ को और अभिव्यकित को आई है तब तक सब छात्र पढते जाते है। वे नियमो या ढांचों से बाहर नही जा सकते ।

- अन्य भाषा मातृभाषा के बल पर ही बन पाती है। हर वकत मातृभाषा बीच में आकर रुकावट डालती है इसलिए कभी-कभी भाषा के नैसर्गिक स्वरुप का परिचय ही नहीं मिल पाता। अनुवाद के सहारे जो परिचय मिलता है वह कृत्रिम सा बन जाता है।

-मातृभाषा मे अगर बच्चा कमजोर हो तो नवीन भाषा में भी कमजोर ही रहता है । अन्य भाषा भी उसके लिए थका देनेवाली बन जाती है। यहाँ भाषा प्रक्रिया जीवन्त नही बन पाती ।

आगमन पध्धति

इस पष्धति में विद्यार्थी सामान्य से विशिष्ट की और जाते है। विशिष्ट उ.दा. के सा आधार पर विद्यार्थीयो के सामान्य नियम या सिध्धांत का ज्ञान दिया जाता है। विद्यार्थी पर कोई सिध्धांत या नियम लादा नही जाता पर शिक्षक विद्यार्थीयों को अनेक उ.दा. देता है। इस उ.दा. पर सें विद्यार्थी सामान्य नियम या सिध्धांत बनाता है।

महत्त्व

-विद्यार्थी अपने आप तक से निर्णय लेता है।

-विद्यार्थी की विचार शकित का विकास होता है।

-विद्यार्थी जो ज्ञान प्राप्त करता है उसका उसे आनंद और आत्म संतोष होता है ।

-विद्यार्थी नियम और सिध्धांत सरलता से समजते है।

-गोखणपट्टी का अवकाश नही है।

-मनोवैज्ञानिक सिध्धांत पर रची हुई पध्धति है ।

मर्यादा

-इस पध्धति में शिक्षणकार्य से ज्यादा समय लगता है ।

-अभ्यास के कुछ मुद्दो को सिखाने में यह पध्धति उपयोगी है।

-सभी सिध्धांत, नियम उ.दा. सरलता से नहीं प्राप्त होते ।

-ज्यादा उ.दा. देने से विद्यार्थी नि:रस होते है।

-शिक्षको को बहुत धीरजता से काम लेना पडता है।

निगमन पध्धति

इस पध्धति में सामान्य से विशिष्ट की और शिक्षण के नियम का उपयोग होता है। सब से पहले नियम सिध्धांत की प्रस्तुत किया जाता है बाद में विविध उ.दा. द्वारा अलग किये सिध्धांत नियम की चकासनी निगमन पध्धति से की जाती है ।

महत्त्व

-कीसी भी नियम को परखने के लिए समझने के लिए दो-या तीन उ.दा. बहोत होते है ।

-ज्ञान में वृध्धि होती है ।

-शिक्षक को ज्यादा महनत नही करनी पडती ।

-उपरी कक्षा के विद्यार्थी के लिए महत्वपूर्ण है ।

-आगमन पध्धति की मर्यादा दूर होती है ।

मर्यादा

-प्रारंभ में ही नियम देने से बालक को समझने में मुश्कील होती है ।

-नियम किस तरह से आया है उस को जानकारी न होने से समझ शक्ति का विकास नही होता है ।

-विद्यार्थी गोखणपट्टी को महत्त्व देते है ।

-विद्यार्थी को सोचने का समय नही मिलता है ।

-अभ्यासक्रम के सभी मुद्दे इस प्रकार से नही सिखाये जाते ।

निरीक्षित स्वाध्याय :-

स्वाध्याय छात्रो को अध्ययन में स्वालंबन प्राप्त करने की आदत डालने की प्रक्रिया है। इनमें पड़ी पढाई बातो को सुदृढ बनाया जा सकता है। सीखी हुई बातो का छात्र उपयोग करना सीखते है। बालक पहले माहिती प्राप्त करता है माहिती के साथ जब समझ आती है तो वही

ही जाल में परिवर्जित हो जाती है। ज्ञान के साथ तत्सम्बन्धी प्रवृत्ति करने पर ज्ञान अनुभव में परिवर्तित हो जाती है । उत्त अनुभव का जब व्यवहार में उपयोग होने लगता है तब शिक्षण की प्रक्रिया की सफ़लता मानी जाती है।

महत्त्व / लाभ

नया नया जानने को मिलता है।

-स्व प्रयत्न करने से ज्ञान प्राप्ति होती है और रुचि बढ़ती है।

- कौशल्य का विकास होता है।

-समय के अनुसार कार्य का ज्ञान प्राप्त होता है।

-व्यकितगत भिन्नता को दूर कर सकते हैं। -समस्या सुलजाने में उपयोगी है।

-स्वावलंबन की आदत पड़ती है।

-वर्ग शिक्षण की मर्यादा दूर होती है।

-विषय की संकल्पना का अच्छा विकास होता है।

समय का सदउपयोग होता है।

-सदर्भ ग्रंथों का उपयोग करने का मौका मिलता है।

-स्व-अध्ययन की आदत पड़ती है।

-छात्रो मे चोरी करने को संभावना नही रहती ।

छात्र अध्यपन रत रहेता है।

छात्र- शिक्षक में निकटता आती है।

मर्यादा

-इस पध्धति में कमजोर छात्रो के पीछे शिक्षक को ज्यादा समय देना पडता है।

-प्रत्येक स्कूल के ग्रंथालय इतने समृध्ध नही होते जहा एक साथ संदर्भ सामग्री मीले।

-अच्छे स्वाध्याया के लिए शिक्षक के पास भी क्षमता होनी चाहिए।

-इस पध्धति में व्यक्तिक शिक्षा पर जोक होने के कारण छात्र में सामाजिक विकास में अवरोधक है।

-सहकार समूह भावना का विकास नही होता ।

-इस पध्धति में तंदुरस्त स्पर्धा का मौका नही मिलता ।

-अध्यापक को विशेष परिश्रम और तैयारी करनी पड़ती है।

प्रकल्प पध्धति

प्रकल्प या योजना पध्धति को हम प्रोजकट पध्धति करते है कृषिक्षेत्र की योजना पध्धति से कार्य करने का विचार शिक्षा के क्षेत्र में आया हुआ माना जाता है । प्रकल्प पध्धति के प्रणेता दो. किलपेट्रिक थे वे ज्होन डयुई के शिष्य थे। शिक्षा के क्षेत्र में ज्होन डयूई के उपयोगितावाद के सिध्धांत के आधार पर इन्होने प्रोजेकट पध्धति का विचार प्रस्तुत क्रिया है। डो. स्टीवन्सन ने संपूर्ण बनाई।

लक्षण

-अध्येता को रोजिदा जीवन उपयोगी हो ।

-प्रोजेकट से जो अनुभव मीले वो फलप्रद हो

-लोकतंत्रीय रस्म पैदा होनी चाहिए।

-अध्येता शारिरीक, मानसिक रुप से प्रवृत रहता है ।

- प्रकल्प अर्थ पूर्ण और हो ।

-अच्छे प्रोजेकट के उदेश्य की जानकारी शिक्षकने प्राप्त की हो

-अध्येता को जिम्मेदारी अदा करने का ज्ञान मिले।

-पैसो का दुर्व्यय न हो और प्रकल्प का हेतु सिध्ध होना चाहिए।

- अच्छा प्रकल्प समाज की अपेक्षा के अनुरुप हो ।

लाभ

- छात्र का अध्ययन समृद्ध बनता है ।

-ज्यादा समय लेनेवाली प्रकल्प पध्धति उतम परिणाम प्राप्त होते है।

-अध्येता कार्यरत रहता है।

-विचार-आचार का समन्वय होता है ।

-शिक्षक छात्र के संबंध प्रगाढ बनते है ।

मानसिक तनाव से मुक्ति मीलती है।

- वैयक्तिक भिन्नता की तृष्टि होती है ।

-रसप्रद प्रवृति होने के कारण वर्ग में स्वयं शिस्त उत्पन्न होता है ।

-जीवन का वास्तविक अनुभव प्राप्त होता है।

-सामाजिक विकास होता है।

मर्यादा

-खर्च बहुत होता है ।

- संदर्भ साहित्य का अभाव

-भाषा के विविध अंगो को शिक्षा इस विधि से नही दी जा सकती ।

-निम्न कक्षा के छात्र के लिए बहुत उपयोगी नही

- केवल एक शिक्षक पर निर्भर करना मुश्किल हो जाता है ।

४.२ प्रयुकितर्या

(१) प्रश्नोत्तर

छात्रो के असरकारक अध्यापन के लिए व्याख्यान पध्धति का उपयोग बहुधा किया जाता है । व्याख्यान में छात्र निष्क्रिय रहेते है। इसलिये छात्र की सक्रियता के लिए प्रश्नकला का उपयोग बहुत असरकारक सिध्ध होता है ।

प्रश्नोत्तर का महत्त्व

-छात्र मानसिक रुप से सक्रिय रहते है।

-छात्रो का अर्थग्रहण जानने का उपयुकत साधन है ।

- छात्र की तर्क शक्ति का विकास होता है।

-वर्गखंडका वातावरण अधिक जीवंत होता है ।

-अध्ययन-अध्यापन असरकारक और क्षमतापूर्ण होता है ।

अच्छे प्रश्न के लक्षण

- प्रश्न की भाषा सरल होनी चाहिए।

- प्रश्न विचार प्रेरक होने चाहिए।

- जिसका उत्तर मात्र हो इस तरह प्रश्न पूछो

- प्रश्न वयकक्षा को ध्यान में रखकर पूछिये

- अत्यंत सरल प्रश्न पूछे नही

-प्रतिघोष युक्त प्रश्न पूछे नही

-एक प्रश्न में एक ही मुदा होना चाहिए।

-व्यापक प्रश्न पुछो नही ।

- उलझन वाले प्रश्न पुछो कही। - हा या ना में उत्तर मीले ऐसे प्रश्न पुछो नही ।

* नाटयीकरण

पाठ्य पुस्तक को नाटयवृति या पाठ्यांतर नाटयकृतिर्या और पाठ्य पुस्तक की किसी कृति या रचना को नाटक के रुप मे वर्ग में या रंगभूमि पर प्रस्तुत करने की प्रयुकित को नाटयीकरण कहते है ?

नाटयीकरण का महत्व/उपयोगिता

-छात्रो को आनंद के साथ मनोरंजन मिलता है।

-संवादों को कंठस्थ करने का अनुभव प्राप्त होता है।

-समाक्षोभ दूर होता है।

- आत्मविश्वास होता है। -छात्र की शक्ति का विकास होता है।

-सर्जन शक्ति का विकास होता है।

-साहित्य के प्रति अभिरुचि बढ़ती है

-विषयांग का अर्थग्रहण सरल होता है -ज्ञान चिरंजीव होता है।

-यात्र के साथ तादात्मय का अनुभव होता है।

-विविध कौशल्यों का विकास होता है।

मर्यादा

-सभी छात्र सहभागी नही बन सकते।

कृति का नाट्य रूपांतर करना हर शिक्षक के बस की बात नहीं।

-शिक्षक में सर्जनात्मकता होनी चाहिए।

समय का दुर्व्यय होता है।

-सभी कृतियों का नाटयीकरण संभव नही

-समय पत्रक में बाधा होती है।

- पोशाक, रंगमंच अन्य सामग्री में बहुत खर्चा होता है।

* गान

मनुष्य प्रकृति से संगीत का प्रेम है। मधुर ध्वनि या मधुर संगीत मनुष्य के अंतस्तल को स्पर्श करता है किसी भी प्रकार का मधुर गान उसको हृदजवीणा के तार को संकृत कर देता है। केवल मनुष्य ही नहीं प्रकृति की गोद में बसे हुए पशु-पक्षी भी गान के ताल में लुब्ध होकर समाधिस्थ बन जाते है।

महत्त्व

- छात्र नादमाधुर्य का अनुभव करते है।

- लय, ताल शब्द को संगती से भावो का अर्थग्रहण होता है।

- शुद्ध उच्चारण, लय, ताल से छात्र अभिज्ञ होते है ।

- छात्र काव्य के भावो का अर्थग्रहण कर सकते है।

-काव्य के भावो को आत्मसात करते है ।

-विद्यार्थीयो के आवेगो का विरेचन होता है ।

- छात्र काव्य के शब्द से भाव विभोर बनते है ।

लक्षण

-शिक्षक का आदर्श गान, भवानुसारी, भाववाही होना चाहिए ।

-काव्यगान शुध्धोच्चारण से करना चाहिए ।

-काव्यगान में नादमाधुर्य, शब्द माधुर्य, लयमाधुर्य का समन्वय होना चाहिए ।

-काव्यगान हृदयस्पर्शी होना चाहिए।

* संदर्भ कथन

जब शिक्षक किसी भी विषयांग या विषयोग के घटक को अच्छी तरह समझाने के लिए स्पष्टीकरण का आश्रय लेता है। स्पष्टीकरण करने के लिए वह किसी पुस्तक, सामयिक या अखबार एव दृश्य-श्राव्य सामग्री से समांतर संदर्भ प्रस्तुत करता है। इसे संदर्भ कथन कहते है।

महत्त्व

-संदर्भ कथन से विषयांग को गति मिलती है।

-छात्र की कठनाइया दूर होती है।

- छात्र संदर्भ साहित्य से आकर्षित होते है ।

-छात्र की अभिरुचि बढ़ती है।

- छात्र का अध्यपन असरकारक होता है।

-अध्यपन-अध्यापन की नीरसता से बचाता है । -

अध्यापक को ओजस्वी और तेजस्वी बनाता है।

*** संदर्भ कथन कब और कैसे ?**

- विद्यार्थीयो के प्रश्न पूछने पर जब आवश्यकता हो तब संदर्भ कथन का इस्तेमाल करना चाहिए।

-किसी अमूर्त संकल्पना या भावो को समझाने के लिए।

छात्र को अर्थग्रहण में जब कठनाइया हो तब संदर्भ कथन करना चाहिए।

-किसी विषयांग विषय के मुद्दो को स्पष्ट करने के लिए।

-छात्र की साहित्य उचि बढाने के लिए।

इकाई 4 राष्ट्रभाषा की शिक्षा का महत्व

4.1 राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी शिक्षा का महत्व

4.2 आहिंदी भाषा के क्षेत्रों में हिंदी शिक्षा का महत्व

4.1 राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी शिक्षा का महत्व

भारत के संविधान के अनुसार हिन्दी भारत की राजकीय भाषा या राष्ट्रभाषा जाहिर हो चुकी हैं। भारतीय गणतंत्र के राजकारोबार के लिए तथा आंतरप्रान्तीय व्यवहार के लिए हिन्दी प्रयुक्त होगी । राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार दोनों के आपसी व्यवहार में हिन्दी की उपादेयता स्पष्ट हैं। हिन्दी पर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी लादकर उसे गौरवान्वित किया गया हैं। संक्षेप में राष्ट्रभाषा के नाते हिन्दी का महत्त्व निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया सकता है ।

राजकीय महत्त्व :

राजभाषा होने के अधिकार से हिन्दी भारत संघ की इकाइयों अर्थात् सभी प्रांतीय राज्यों के बीच एकता स्थापित करने की कड़ी का काम करेगी। भारत जनतंत्र में सौ करोड़ लोग हैं। उन सब की भावनाएँ, इच्छाएँ और आकांक्षाएँ आदि को सारे भारत में फैलाने का काम हिन्दी भाषा को ही करना होगा। फारसी और अंग्रेजी की भाँति हिन्दी को सिर्फ शासकों की भाषा नहीं परन्तु जनता की भाषा बनना है और

इस प्रकार भारत के प्रत्येक खंड को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए और एकता स्थापित करने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही काम करना होगा देश में भावनात्मक एकता का सब से श्रेष्ठ साधन हिन्दी है । भारत में विविध प्रान्तीय भाषाएँ वर्तमान हैं । भाषाकीय सकुंचितताओं की सीमाओं को तोडकर, साम्प्रदायिक मतभेदों को मिटाकर और छोटे मोटे प्रांतीय तथा क्षेत्रीय स्वार्थो की सीमाओं को तोड़कर सब में एकता स्थापित करने की क्षमता हिन्दी में है ।

शासकीय महत्त्व :

भारत के संविधान ने हिन्दी को प्रशासन का माध्यम बनाया है। केन्द्र के सभी कर्मचारी तथा राज्यों के कर्मचारियों से यह अपेक्षा रखी है कि वे 15 वर्ष की अवधि में हिन्दी सीख लें तथा प्रशासन के कार्य में राजभाषा हिन्दी का उपयोग शरू करें। आजादी के पहले अंग्रेजी का जो स्थान प्रशासन की दृष्टि से था वही स्थान हिन्दी ग्रहण करेगी। अतः राजकारोबार के लिए हिन्दी का प्रचार जितना अधिक होगा उतनी सरलता होगी । अंग्रेजी का महत्त्व दिनों दिन कम होता जा रहा है । लाख प्रयत्न करने पर भी भारत में अंग्रेजी को अपना पुराना गौरव अब फिरसे नहीं मिल सकेगा। और गौरव का स्थान तो हिन्दी ही लेकर रहेगी ।

सांस्कृतिक महत्त्व :

हिन्दी के सांस्कृतिक महत्त्व को पहचानकर हमारी संविधान सभा ने उसे राष्ट्रभाषा का स्थान दिया । हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है । भारत की अन्य भाषाओं की जननी भी संस्कृत है । अत: इन सब भाषाओं में तथा हिन्दी और संस्कृत में हमारी संस्कृति का प्रतिबिम्ब झलकता । भारत के साधु संत महात्माओं ने संस्कृत के बाद हिन्दी भाषा के माध्यम से अपना काम चलाया है। भारत के सभी प्रदेशों में अलग अलग बैठ कर इन महात्माओं ने सर्वजनभोग्य हिन्दी में ही अपनी रचनाएँ और उपदेश अभिव्यक्त किये हैं । हमारा दर्शन, विचार, आदर्श, भावनाएँ, मान्यताएँ, विश्वास, रीतिरिवाज, धार्मिकता आदि सब में भारतीय संस्कृति की सभी बातें हिन्दीभाषा तथा साहित्य में प्रतिबिंबित होती हैं। अगर कोई भारतीय संस्कृति का थोड़े ही में परिचय प्राप्त करना चाहे तो हिन्दी साहित्य के अध्ययन से वह अपना काम चला सकता है । हमारी संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में हिन्दी साहित्य के प्राचीन स्वरूपों से लेकर के आज के वर्तमान साहित्य को किसी के भी सामने गौरव से पेश किया जा सकता है ।

व्यावसायिक महत्त्व :

पहले से लेकर आज भी आंतरप्रांतीय व्यवहार के लिए लोग किसी न किसी रूप में हिन्दी का उपयोग करते हैं। यात्रा करते समय, व्यापार के लिए तथा भिन्न प्रान्तों के लोग आपसी बातचीत के समय हिन्दी भाषा का उपयोग करते हैं। अंग्रेजी तो थोड़े ही समय पहले भारत में आए, उसके पहले भी आंतरप्रान्तीय व्यवहार तो होता ही होगा। उस समय आज के अंग्रेजी नहीं जाननेवाले लोग जिस भाषा में अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, उसी भाषा में आंतरप्रान्तीय व्यवहार चलाते होंगे। कोई शक नहीं कि उनकी बातचीत का माध्यम हिन्दी की कोई न कोई बोली ही रही होगी। राष्ट्रभाषा घोषित होने के कारण अब तो हिन्दी में काफी क्षमताएँ पैदा होने लगी हैं। विश्व की सभी भाषाओं के उपयोगी शब्दों को में लेकर उसकी व्यावसायिक क्षमता में वृद्धि करने प्रयत्न किये जा रहे हैं। तार टेलिफोन आदि में हिन्दी का उपयोग होने लगा है। राजकीय नौकरियों के लिए भी हिन्दी जानने वालों को पसंदगी मिल रही है। ज्ञानविज्ञान के सभी विषयों पर आज हिन्दी में धडाधड नयी नयी किताबें लिखी व छापी जा रही हैं । इस तरह हिन्दी की व्यावसायिक योग्यता तथा महत्त्व बढ़ रहा है।

साहित्यिक महत्त्व :

साहित्यिक दृष्टि से भारत की अन्य प्रान्तीय भाषाएँ जैसे तमिल, गुजराती, मराठी, बंगला आदि के साहित्य की तुलना में हिन्दी भाषा का साहित्य अधिक विकसित नहीं हो सका है। मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिन्दी के बनिस्बत अन्य प्रान्तीय भाषाएँ आगे हैं। पर में भी गिने-चुने कवि या लेखक हैं जिन्होंने आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की हैं। भारत की अन्य भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं के अनुवाद हिन्दी की समृद्धि को अब बढ़ा रहे हैं। विदेशों में भी हिन्दी साहित्य का अध्ययन किया जा रहा है। भारत के सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी की शिक्षा का प्रबंध हो रहा । शीघ्र ही एक दिन आएगा कि जब हिन्दी साहित्य को विश्व के श्रेष्ठ साहित्यों में स्थान प्राप्त होगा

4.2 अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी शिक्षा का महत्त्व

जब हिन्दी अन्य भाषा या राष्ट्रभाषा रूप में सिखाई जायेगी हो उसकी शिक्षा का स्तर उतना ऊंचा नहीं रहेगा जितना मातृभाषा की शिक्षा का है । अहिन्दीभाषी प्रदेशों में आम तौर पर हिन्दी भाषा का वातावरण विद्यार्थी को नहीं मिल सकेगा। विद्यार्थी के चारों ओर मातृभाषा का वातावरण बना रहता है। अतः हिन्दी की शिक्षा के उद्देशों का निर्धारण करते समय इसका भी ख्याल रखा जाय यह जरूरी है ।

किसी भी भाषा के ज्ञान के चार मुख्य उद्देश इस प्रकार बतायेजा सकते हैं :

(1) सुनकर समझने की योग्यता करना ।

(2) पढ़कर समझने की योग्यता प्राप्त करना ।

(3) वाणी द्वारा आत्माभिव्यक्ति करना ।

(4) लिखकर अपने भाव प्रकट करने की योग्यता प्राप्त करना ।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की शिक्षा के भी ये उद्देश हो सकते हैं परंतु ऊपर बताये गये ये उद्देश शिक्षक के लिए स्पष्टता नहीं कर सकते हैं । अतः हमें स्पष्ट (Pin-pointed) उद्देश निश्चित करने चाहिए।

उद्देश्य या विशिष्ट उद्देश का अंतिम लक्ष्य तो विद्यार्थी के व्यवहार में उचित और अपेक्षित परिवर्तन लाना है । विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तनो के द्वारा (Behavioural Changes) हम उसे सर्वांगीण शिक्षा दे सकते हैं । अतः हमारा हर एक मुख्य उद्देश विद्यार्थी की भाषा में या विद्यार्थी के व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन की भाषा में लिखा गया है । हम चाहते हैं कि हमारी शिक्षा के फलस्वरूप विद्यार्थी के व्यवहार में निश्चित प्रकार का परिवर्तन हो । मुख्य उद्देश एक अंतिम बड़े परिवर्तन के रूप में होता है। परंतु किसी के व्यवहार में परिवर्तन छोटे-छोटे परिवर्तनो की प्रक्रिया के जरिये आता है। विशिष्ट उद्देश छोटे- छोटे क्रमिक परिवर्तनो का व्याख्यात्मक रूप है शिक्षक इस विषय में जितना अधिक स्पष्ट होगा, विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तनों को जितनी स्पष्टता से वह पहले साकार रूप में अपने मनः चक्षुओं के सामने देख सकेगा उतनी ही अधिक सफलता उसे अपने विषय की शिक्षा में मिलेगी ।

किसी भी विषय के मुख्य उद्देश्य तथा विशिष्ट उद्देश निश्चित करते समय निम्नलिखित बातों को मद्देनजर रखना चाहिए ।

(1) उद्देश सरल भाषा में होने चाहिए ।

(2) उद्देश में एक ही किया का भाव आना चाहिए ।

(3) छोटे वाक्य के द्वारा उद्देश को स्पष्ट करना चाहिए ।

(4) उद्देश प्राप्त हो सके ऐसे होने चाहिए ।

(5) विशिष्ट उद्देश, मुख्य उद्देश के क्षेत्र में ही रहना चाहिए।

(6) उद्देश अपने विषय के क्षेत्र के बाहर नहीं जाना चाहिए।

(7) शैक्षणिक परिस्थिति (learing situation) और विशिष्ट उद्देश (specific objectives) एक न हो जाय इसका ख्याल रखना चाहिए ।

(8) उद्देश अति महत्त्वाकांक्षी नहीं होने चाहिए ।

हिन्दी की शिक्षा हिन्दी भाषी प्रदेशों में भी दी जाती है और अहिन्दीभाषी प्रदेशों में भी दी जाती है। हिन्दीभाषी प्रदेशों में भी हिन्दी भाषा की शिक्षा के जो उद्देश हैं वे सभी उद्देश अहिन्दीभाषी प्रदेशों में हिन्दी भाषा की शिक्षा के समय नहीं हो सकते हैं अहिन्दीभाषी प्रदेशों में हिन्दी भाषा का ज्ञान ज्ञानप्राप्ति के साधन के रूप में नहीं है, न भावों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भी। बहुभाषी भारत के लोगों के आपस के व्यवहार को सरल बनाने के लिए आंतरभाषा के रूप में हिन्दी का महत्त्व है। इसी उद्देश से अहिन्दीभाषी प्रदेशों में उसकी शिक्षा दी जाती है। अतः हिन्दी के ज्ञान की इस सीमारेखा को निश्चित करने के बाद अब हम हिन्दी की शिक्षा के उद्देशों का निर्धारण करने का प्रयत्न करेंगे ।

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी भाषा की शिक्षा के सामान्यतः निम्नलिखित उद्देश हो सकते हैं ।

(अ) विद्यार्थी सरल हिन्दी में अपने विचारों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करेगा ।

(आ) विद्यार्थी शुद्ध और सरल हिन्दी में अपने विचारों को लिखकर प्रकट कर सकेगा ।

(ड) सुनी हुई हिन्दी भाषा को विद्यार्थी भली भांति समझ पायेगा।

(ई) विद्यार्थी हिन्दी भाषा में सहेतुक वाचन करने की क्षमताप्राप्त करेगा ।

(उ) विद्यार्थी पद्य का रसास्वाद करेगा ।

(ऊ) लिखी हुई हिन्दी भाषा को विद्यार्थी ठीक रूप से समझ पायेगा |

(ए) विद्यार्थी हिन्दी भाषा की अपनी शब्दसमृद्धि में वृद्धि करेगा।

(ऐ) विद्यार्थी में हिन्दी भाषा के विशेष वाचन की अभिरुचि बढ़ेगी 8.3

अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी शिक्षा का महत्त्व :

अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी शिक्षा का बहुत ही महत्त्व है इसके 19) लिए कई कारण दिये जा सकत हैं। इन कारणों को मद्देनज़र रखकर इसके महत्त्व का अंदाजा लगाया जा सकता है। ये कारण इस प्रकार

(1) जन जन को जोड़नेवाली :

के लिए एक कवि ने गाया है।

'हिन्दी भारत की गंगा है

जन जन को जोड़नेवाली गंगा है ।'

स्पष्ट है कि हिन्दी में सारा भारतवर्ष एकता का अनुभव कर सकता है। इस तरह राष्ट्र की भावात्मक एकता बनाये रखने के लिए भी हिन्दीत्तर प्रान्तों में हिन्दी का अध्यापन होना चाहिए

(2) हिन्दी एक सरल भाषा है :

ऐसा में नहीं, भाषाविज्ञानी कहते हैं। हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है, अंग्रेजी नहीं। ध्वन्यात्मकता का अर्थ है जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। इसीलिए सरल है। अंग्रेजी में Put पुट But - बुट नहीं बट । मुश्किलों का आरम्भ उच्चारण के साथ हो जाता है। इस दृष्टि से हिन्दी सीखना सरल है। हिन्दीत्तर प्रान्तों में इस दृष्टि से सिखाना सरल हो जाता है ।

(3) मातृभाषा के साथ हिन्दी की समानता :

कई ऐसे हिन्दीत्तर प्रान्त हैं जहाँ की मातृभाषा तथा हिन्दी भाषा दोनों का भाषाकुल एक ही है। परिणाम स्वरूप दोनों भाषाओं में समानता विद्यमान है । ये समानताएँ निम्नांकित स्तरों पर दिखाई देते हैं

	गुजराती	**हिन्दी**
वर्ण स्तर पर	ડ	ड
	પ	प
	ય	य
	ર	र
	ક્ષ	क्ष
शब्द **स्तर**	આજ	आज
	વ્યક્તિ	व्यक्ति
	શક્તિ	शक्ति
	વાંચન	वाचन
	લઘુ	लघू
वर्तनी **स्तर पर**	શક્તિ	शक्ति
	દીપક	दीपक
	દિવસ	दिवस
	પ્રતિક્ષા	प्रतीक्षा

	નહિ	नहीं
अर्थ **स्तर पर**	અપેક્ષા	अपेक्षा
	સંવેદના	संवेदना
	દુઃખ	दु:ख
	ગ્લાનિ	ग्लानि
वाक्य स्तर पर :	કર્તા કર્મ ક્રિયાપદ	कर्ता क्रम क्रिया
	હું પુસ્તક વાંચું છું.	मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
	કર્તા કર્મ ક્રિ.વિ. ક્રિયાપદ	कर्ता कर्म क्रि.वि. क्रिया
	હું પુસ્તક નથી વાંચતો	मैं पुस्तक नहीं पढ़ता हूँ।

ऐसे कई मुद्दे हैं कि भारत की अन्य भाषा के बदले हिन्दी पढ़ाना पढ़ना आवश्यक है।

विदेश देश में व्यवसाय पाने में :

देश-विदेश में अच्छा व्यवसाय पाने के लिए भी हिन्दी सीखना आवश्यक है। भारत सरकार ने तमाम सरकारी नौकरियों के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य दिया है। में पाने के लिए हिन्दी का ज्ञान बहुत ही उपयोगी होता है। इस दृष्टि से अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी शिक्षा का महत्त्व है।